Goonjnayi@gmail.com

अप्रैल अंक 2022

शोध साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट मासिक पत्रिका नई गूंज

Www.nayigoonj.com

NAYI GOONJ – SHODH , SAHITYA EVAM SANSKRITI (MONTHLY) MAGAZINE

शोध , साहित्य और संस्कृति की मासिक वैब पत्रिका

नयी गूंज-------.

वर्ष 2022

अंक 4

WEBSITE- nayigoonj.com
Email address goonjnayi@gmail.com -
WHATSAPP NO. 91-9785837924

संपादक मंडल

प्रमुख संरक्षक

प्रो. देव माथुर

vishvavishvaaynamah.webs1008@gmail.com

मुख्य संपादक

रीमा माहेश्वरी

shuddhi108.webs@gmail.com

संपादक

शिवा 'स्वयं'

sarvavidhyamagazines@gmail.com

शाखा प्रमुख

ब्रजेश कुमार

aryabrijeshsahu24@gmail.com

परामर्शदाता

कमल जयंथ

jayanth1kamalnaath@gmail.com

संपादकीय

शिवा 'स्वयं'

हमारे लिए हम

मैंने सोचा कि खुद को ढूंढ लूँ, तो लिख लिया ! बहुत शोर होता है, आस पास ! बस काम तरह – तरह के ! सुबह से शाम ! सबसे कीमती साँसो को ख़र्च बहुत सस्ते में करते हैं हम ! बाकि सब तो हिसाब किताब से, बड़े मोल भाव से खरीदते – बेचते हैं ! लेकिन सबसे सस्ता जीवन को बिताते हैं ! कुछ भी – कभी भी !

बहुत तरस गया मन ! हर दिन लगा कल तो जरूर वो कर लेंगें जो आज नहीं किया ! लेकिन वो कल नहीं आया कभी ! हर आज ऐसे कल की चाहत में बीतता गया ! जिंदगी सस्ते में बीतती गई !

इतनी कट गई, आगे भी ऐसे ही कट जाएगी तो फिर क्यों इकट्ठे करते रहे हम कागज़ो पर अपनी उपलब्धियों को ? इतनी डिग्रियों को !

मनुष्य जीवन का मोल नहीं समझा पढ़ लिख कर और हम कागज़ो की गिनती से अपने आप को वजनदार समझते हैं !

हाँ सब जरूरी होता है जीवन में - रोटी, कपड़ा और मकान !

ये तो मूलभूत हैं ! इनके अभाव में कुछ भी संभव नहीं !

लेकिन ये बाहरी पूर्ति के साधन हैं ! शारीरिक रूप से !

आत्मिक पूर्ति के लिए खुद को हर दिन माझंना होता है ! बर्तन रोज़ साफ किये जाते हैं जैसे ! नहीं तो खाना कितना ही शुद्ध हो, स्वादिष्ट हो, साफ बर्तनों में में ना परोसा जाये तो अशुद्ध ही हो जायेगा ना,

अर्थ यह है कि ईश्वर ने कितना भी अच्छा दिया हो हमें, अंतः करण शुद्ध व पवित्र है तो वो अच्छा ज्यों का त्यों भीतर उतरेगा जो ईश्वर ने दिया, नहीं तो उनका दिया सब कुछ उसी तरह हमारे समक्ष होगा जैसे झूठे बर्तनों में पवित्र भोजन ! ऐसा करना शुद्ध भोजन का अपमान करना होगा !

जीवन भी ऐसा ही है ! ईश्वर का दिया ही है ! इसको जैसे चाहे रखना, जैसा चाहे जीना, जीवन को साधक बनकर जीने की बजाय साधनों की प्राप्ति के लिए जीना, ईश्वर की भेंट जीवन का अपमान करने जैसा ही है !

इसलिए ढूंढ़ना तो जरूरी है खुद को ! सुनना भी तो जरूरी है खुद को !

जीवन को जीवन की तरह जियें, ऐसे कि कोई तो प्रयोज़न होगा कि ये अमूल्य जीवन हमें मिला ! हम जीवन को सम्पूर्ण कैसे बनाएंगे ! इसकी एक ही विधि है, वो जो आप होना चाहते हैं वो हो जाइये नहीं तो कुछ भी करके आप सम्पूर्ण नहीं हो सकते ! इस बात को इस तरह समझिये,

एक चींटी, जो भी उसका सम्पूर्ण हो सकता है, वो बनने में लगी है, और हाथी जैसा उसका जीवन सम्पूर्ण हो सकता है वैसा होने का प्रयास करता है ! हमें भी जीवन को सम्पूर्ण बनाना है तो अपने आपको भीतर से बढ़ाना होगा वहाँ तक जितनी भी हमारी क्षमता है ! ज़ब हम भीतर से खुद को सम्पूर्ण करने लगते हैं, बाहर की बातें हमें प्रभावित नहीं कर पाती ! कुछ अच्छा, कुछ बुरा, जो भी हमें पसंद नहीं वैसा कितना कुछ बाहर हो रहा है लेकिन

अगर हम बाहर से दुनिया को अपने अनुसार बनाने का प्रयास करेंगे तो ये बिल्कुल वैसा ही होगा कि एक ही जगह खड़े रहकर, दौड़ते रहना, कई सालों दौड़ने के बाद भी आप खुद को वहीं खड़ा पाएंगे !

शुभेच्छा

नयी गूंज------. परिवार

परामर्शदाता-

प्रश्न है कि संस्कृति क्या है। यूं संस्कृति शब्द सम्+कृति से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी कृति। अर्थात् संस्कृति वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता के परिचायक उदात्त तत्वों का नाम है।

भारतीय सन्दर्भ में संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टिनिष्ठ होती है। संस्कृति की संरचना एक दिन में न होकर शताब्दियों की साधना का सुपरिणाम होता है। अतः संस्कृति सामासिक- सामाजिक निधि होती है। संस्कृति वैचारिक, मानसिक व भावनात्मक उपलब्धियों का समुच्चय होती है। इसमें धर्म, दर्शन, कला, संगीत आदि का समावेश होता है। इसी की अपरिहार्यता की ओर संकेत करते हुए भर्तृहरि ने लिखा है कि इसके बिना मनुष्य घास न खाने वाला पशु ही होता है-

"साहित्यसंगीतकला- विहीनः

साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः।।

मुख्य संपादक

उपनिषद् के शब्दों में कहें तो संस्कृति में जीवन के दो आयाम श्रेय व प्रेय का सामंजस्य होता है। इन्हीं आधार पर आध्यात्मिक, वैचारिक व मानसिक विकास होता है और इन्हीं के आधार पर जीवन-मूल्यों व संस्कारों का निर्धारण होता है और यही जीवन के समग्र उत्थान के सूचक होते हैं। शिक्षा-तंत्र में इन्हीं सांस्कृतिक मूल्यों का शिक्षण-प्रशिक्षण होता है। वर्तमान में शिक्षा-व्यवस्था संस्कृति की अपेक्षा सम्यता- निष्ठ अधिक है। तात्पर्य है कि वर्तमान शिक्षा विचार- प्रधान, चिन्तन- प्रधान व मूल्यप्रधान की अपेक्षा ज्ञानार्जन- प्रधान है। वस्तुतः इसी का परिणाम है कि सम्प्रति शिक्षा के द्वारा बौद्धिक स्तर में

तो अभिवृद्धि हुई है किन्तु संवेदनात्मक या भावनात्मक स्तर घटा है।

संपादक -

हमारी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर पश्चिमी सभ्यता-मूलक तत्वों को उपादान के रूप में ग्रहण कर लिया गया है। तभी तो शिक्षा व समृद्धि के पाश्चात्य मानदण्डों को आधार मान लिया है जो संस्कृति-विरोधी हैं, जिनमें नैतिक व मानवीय मूल्यों का विशेष स्थान नहीं है। इसी का परिणाम है कि बुद्धिमान व गरीब नैतिक व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से भी हांसिये पर ही रहता है और नैतिकता-विहीन, संवेदनहीन, भ्रष्टाचारी व अपराधी भी सम्पन्न, सभ्य, सम्मान्य व प्रतिष्ठित होता है। इसी संस्कृति-विहीन व्यवस्था के कारण शोषण-प्रधान पूंजीवादी व्यवस्था ही ग्राह्य हो गई है, जिसने रहन-सहन के स्तर को तो उठाया है, पर इस भोगवादी बाजारवादी व्यवस्था के कारण अर्थशास्त्र व तकनीकिविज्ञान के सामने नैतिकता व मानवीयता गौण हो गई है। जबकि राधाकृष्णन व कोठारी आयोग की मान्यता थी कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन सके। इस दृष्टि से भारतीय प्रकृति और संस्कृति के अनुरूप शिक्षा से ही मूल्यपरक उदात्त-गुणों का संप्रेषण और समग्र व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। इसमें पुराने व नये का बिना विचार किये जो देश की अस्मिता व समाज के हितकर है, उसी को प्रमुखता देनी चाहिए।

शाखा प्रमुख की कलम से--

प्रिय पाठकों

संस्थान की पत्रिका नयी गूंज के पहले अंक का लोकार्पण एक आंतरिक सुख की अनुभूति करा रहा है।

मुझे प्रसन्नता है कि शाखा प्रमुख *के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मुझे आप सभी से नयी गूंज के इस अंक के माध्यम से रूबरू होने का मौका मिल रहा है।*

हम कितना भी विकास कर लें किन्तु यदि समाज में संवेदना ही मर गई तो सब व्यर्थ है। इस संवेदनहीनता के चलते समाज में नकारात्मक ऊर्जा दिन प्रति-दिन बढ़ती जा रही है जो निन्दनीय भी है और विचारणीय भी। आवश्यकता है कि हम अविलम्ब इस दिशा में अपने प्रयास आरम्भ कर दें।

वस्तुतः अपने कर्मों से हम अपने भाग्य को बनाते और बिगाड़ते हैं। यदि गंभीरता से चिंतन-मनन किया जाय तो हमारा कार्य-व्यापार हमारे व्यक्तित्व के अनुसार ही आकार ग्रहण करता है और हमें अपने कर्म के आधार पर ही उसका फल प्राप्त होता है। कर्म सिर्फ शरीर की क्रियाओं से ही संपन्न नहीं होता अपितु मनुष्य के विचारों से एवं भावनाओं से भी कर्म संपन्न होता है। वस्तुतः जीवन-भरण के लिए ही किया

गया कर्म ही कर्म नहीं है हम जो आचार-व्यवहार अपने माता-पिता बंधु मित्र और रिश्तेदार के साथ करते हैं वह भी कर्म की श्रेणी में आता है। मसलन हम अपने वातावरण सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक समीकरणों आदि के प्रति जितना ही संवेदनशील होंगे हमारा व्यक्तित्व उतनी ही उच्चकोटि की श्रेणी में आयेगा।

आज के जटिल और अति संचारी जीवन-वृति के सफल संचालन हेतु सभी का व्यक्तित्व उच्च आदर्शों पर आधारित हो ऐसी मेरी अभिलाषा है।

यह ज़रूरी नहीं है कि हर कोई हर किसी कार्य मे परिपूर्ण हो, परन्तु अपना दायित्व अपनी पूरी कोशिश से निभाना भी देश की सेवा करने के समान ही है। संपूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से किया हुआ कार्य आपको अवश्य ही कार्य-समाप्ति की संतुष्टि देगा। कोई भी किया गया कार्य हमारी छाप उस पर अवश्य छोड़ देता है अतएव सदैव अपनी श्रेष्ठतम प्रतिभा से कार्य संपन्न करें। हर छोटी चर्या को और छोटे-से-छोटे से कार्य के हर अंग का आनंद लेकर बढ़ते रहना ही एक अच्छे व्यक्तित्व का उदाहरण है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि नयी गूंज एक उच्च स्तरीय पत्रिका है जिसमें विभिन्न विधाओं में उच्चस्तरीय लेखों का अनूठा संग्रह है

आप सभी पत्रिका का आनन्द लें एवं अपनी प्रतिक्रियायें ऑनलाइन या ऑफलाइन भेजें।

नयी गूंज के माध्यम से हमारा आपका संवाद गतिशील रहेगा। आप सभी अपनी सुन्दर व श्रेष्ठ रचनाओं से नयी गूंज को निरन्तर समृद्ध करते रहेंगे इसी विश्वास के साथ।

अंत में मैं सभी सम्पादक मण्डल के सदस्यों एवं रचनाकारों को नयी गूंज पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए साधुवाद ज्ञापित करता हूं करता हूँ।

आप सभी को हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद!!

कालिदास ने काव्य के माध्यम से कहा है-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः।।

अर्थात् पुरानी ही सभी चीजें श्रेष्ठ नहीं होती और न नया सब निन्दनीय होता है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति परीक्षा करके जो हितकर होता है उसी को ग्रहण करते हैं जबकि मूर्ख दूसरों का ही अन्धानुकरण करते हैं।

अस्तु, निर्विवाद रूप से यह सभी स्वीकार करते हैं कि राष्ट्र की रक्षा, का सकारात्मक पक्ष होता है।

प्रकाशन सामग्री भेजने का पता

ई-मेल:goonjnayi@gmail.com

नयी गूंज इंटरनेट पर उपलब्ध है। www.nayigoonj.com पर क्लिक करें।

नयी गूंज में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है

शुल्क दर 40/-

वार्षिक: 400/-

त्रैवार्षिक: उपर्युक्त शुल्क-दर का अग्रिम भुगतान 1200/-

को --द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

नियम निर्देश

1 रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।

2 लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आँकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

3 अनुदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान संपादक मंडल प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।

4 प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।

नई गूँज नियमावली

रचनाएं goonjnayi@gmail. Com ई-मेल पते पर भेजी जा सकती हैं। रचनाएं भेजने के लिए नई गूँज के साथ लॉग-इन करें, यह वांछित है।आप हमारे whatsapp no. 9785837924 पर भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं

प्रिय साथियों,

नई गूँज हेतु आपके सहयोग के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। आशा है कि ये संबंध आगे भी प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेंगे। आगामी अंक हेतु आप सबके सक्रिय सहयोग की पुनः आकांक्षा है। आप सभी से एक महत्वपूर्ण अनुरोध है कि आप अपने शोध प्रपत्र निम्न प्रारूप के तहत ही प्रस्तुत करें जिससे कि हमें तकनीकी जटिलताओं का सामना न करना पड़े -

1.प्रकाशन हेतु आपकी रचना के मौलिक होने का स्वतः सत्यापन **रचना प्रेषित करते समय "मौलिकता प्रमाण पत्र" पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य है। इसके बिना रचना पर विचार करना संभव नहीं होगा**

2. रचना कहीं पर भी पूर्व में प्रकाशित नहीं होनी चाहिए !

3. आपकी रचनाएँ ए**म.एस. ऑफिस** में टाइप होना चाहिए

4. **फोंट** - कृतिदेव **10**, मंगल यूनिकोड

5. रचनाओं के साथ अपना पूर्ण पता, मोबाइल नंबर, ईमेल तथा पासपोर्ट साइज की फोटो लगाना अपेक्षित है !

6. आप लेख, कविता, कहानी, किसी भी विधा में रचनाएँ भेज सकते हैं !

नई गूँज रचनाओं के प्रेषण सम्बंधित नियम व शर्ते :

एक से अधिक रचनायें एक ही वर्ड-डॉक्यूमेंट में भेजें।

रचनायें अपने पंजीकृत पेज पर दिए गए लिंक इस्तेमाल कर प्रेषित करें।

यदि आप हिंदी में टाइप करना नहीं जानते हैं, आप गूगल द्वारा उपलब्ध करवायी गयी लिप्यान्तरण सेवा का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए Google इनपुट उपकरण लिंक पर जाएँ।

स-आभार

संपादक मंडल

Note:- प्रत्येक रचना लेखक की स्वयं मौलिक तथा लिखित है! इसमें लेखक के स्वयं के विचार हैं तथा कोई त्रुटि होने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा!

अनुक्रमाणिका

क्रम संख्या	विवरणिका		पृष्ठ संख्या
	लेख –	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	सादगी एक गहना है!	अर्चना त्यागी	1
2	होली फीलिंग से मनाएं होली	डॉ घनश्याम बादल	2 – 5
3	गावों का सर्वांगीण विकास हो सुनिश्चित	बृजेश कुमार	6 – 9
	कविता		
4	अग्नि पथ	राहुल दीवान	10
5	अगर न होती	अमरेंद्र कुमार तिवारी	11 - 12
6	कोरोना	डा. मोहनसिंह	13
7	मेरी हरदम	अर्विना प्रयागराज	14 – 16
8	खारा पानी	लतिका बत्रा	17
9	गीत –किस विकास के भ्रम में	बृजराजकिशोर	18
	कहानी		
10	बेटी बचाओ /बेटी पढ़ाओ	नेतपाल यादव	19 – 21
11	शब्द शब्द	डॉ शिवा धमेजा	22 – 23
	गजल		
12	गजल	हातिम जावेद	24 – 27
	लघु कथा –		

13	थूक	बृज राजकिशोर राहगीर	28 – 29
14	कद्र	डा. नयना	30 – 31
15	त्याग	अमिताभ कुमार	32
	नारी तुम अबला नहीं सबला हो		
16	स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सर्वस्य न्योछावर करने वाली -दुर्गा भाभी		33 – 35
	आलेख –		
17	नारी -----नया परिदृश्य	नीना छिब्बर	36 – 37
18	ऐतिहासिक स्थल एक नजर – जैसलमेर दुर्ग (राज.)		38 – 40
	साहित्य पुरस्कार के बारे में जानिए		
19	मीरा पुरस्कार		41 – 43
20	औषधिये पौधे के बारे में जानिए -तुलसी		44 – 45
	साक्षात्कार		
21	आर जे एस की तैयारी कैसे करें?	सीमा धमेजा	46 – 48

सादगी एक गहना है।

दुनिया की चकाचौंध में खोकर हम एक आभूषण को पहनना भूलते जा रहे हैं। इसका नाम और महत्व दोनों हमें मालूम हैं लेकिन यह वर्तमान समय में चलन में नहीं है। इस आभूषण का नाम है **"सादगी"**। प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को प्रभावी बनाने के लिए अपने आचार व्यवहार को पूरी तरह बदलने में लगा हुआ है। जीवन की दौड़ में आगे निकलने के लिए वह अपने प्राकृतिक स्वभाव को भी परिवर्तित कर लेता है। कुछ दूर जाने के बाद अहसास होता है कुछ था जो अनमोल था लेकिन अनजाने में उसे खो दिया है। एक खूबसूरत गहना पहनना रह गया है।

मेरी विचारधारा के कारण मुझे पुराने जमाने का माना जा सकता है क्योंकि मैं मानती हूं कि सादगी सबसे बड़ा आकर्षण है। इस कृत्रिम वातावरण में एक सादा इंसान सबसे अलग नज़र आता है। उसकी सादगी की चमक उसे विशिष्ट बना देती है। नकाब पहने हुए लोगों की बढ़ती हुई भीड़ में उसका ही चेहरा नज़र आता है। सादगी की चमक के सामने दुनिया की हर चमकदार वस्तु फीकी नज़र आती है। ठीक वैसे ही जैसे दुनिया की सारी रोशनी एकत्रित होकर भी सूर्य की रोशनी का मुकाबला नहीं कर सकती है।

अब्राहम लिंकन, महात्मा गांधी, अटल बिहारी बाजपेई, ए पी जे अब्दुल कलाम के साथ साथ और भी बहुत से नाम हैं जिन्होंने जीवन भर सादगी को अपनाया है। इन महान व्यक्तियों का जीवन सबके लिए अनुकरणीय है। ये सभी आडंबर रहित जीवन जीना पसंद करते थे। अपनी शक्तियों को इन्होंने उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समर्पित किया। उन्होंने अपने उसी स्वरूप को स्वीकार किया जो ईश्वर ने उन्हें दिया था। ईमानदारी से कर्तव्य निर्वाह किया और सादा जीवन उच्च विचार का सिद्धांत बना गए। आइए इस गहने को पहने और अपना जीवन अनुकरणीय बनाएं।

अर्चना त्यागी

'होली फीलिंग' से मनाएं होली !

ताकि बच सकें बदरंग होते रंग

रंगों और मस्ती का त्योहार होली भारत में दो दिन तक संस्कृति व मस्ती का नया रूप लेकर आता है। विशेषत: भारत तथा नेपाल में मनाया जाने वाला होली व फाग़ का पर्व कई अन्य देशो में भी मस्ती से मनाया जाता है।

अहा होली आई !

वसंत का संदेशवाहक, राग-रंग के लोकपर्व होली में राग और रंग प्रमुख रूप से समाए हैं। प्रकृति इस समय अपने चरम पर होती है।

एक वक्त था जब होली का जश्न वसंत पंचमी से ही शुरू हो जाता था पहले गुलाल उड़ता था फिर रंग बिखरते थे । फाग से पखवाड़े भर पहले ही धमाल गाना प्रारंभ हो जाता था। बच्चे-बूढ़े सब संकोच भूलकर ढोलक-झांझ-मंजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगो में डूब जाते थे पर अब वह बात कहां?

रंग बदलती होली

होली का स्वरूप समय के साथ बदलता रहा है। प्राचीन में यह विवाहित महिलाओं द्वारा परिवार की सुख समृद्धि के लिए मनाया जाता था और पूर्ण चंद्र की पूजा करने की परंपरा थी।

नवशस्येष्टि यज्ञपर्व

वैदिक काल में इस पर्व को नवशस्येष्टि यज्ञ कहा जाता था। उस समय खेत के नए उगे अन्न को अग्नि में डालकर प्रसाद लेने का विधान समाज में व्याप्त था। अन्न को होला भी कहते हैं, इसीसे इसका नाम होला महल्ला और होलिकोत्सव पड़ा। भारतीय ज्योतिष के अनुसार चैत्र शुदी प्रतिपदा के दिन से नववर्ष का भी

आरंभ माना जाता है। अतः यह पर्व नवसंवत का आरंभ तथा वसंतागमन का प्रतीक भी है। इसी दिन प्रथम पुरुष मनु का जन्म भी हुआ था।

खो गए बडकुल्ले :

बृज की होली आज भी सारे देश के आकर्षण का बिंदु होती है। बरसाने की लट्ठमार होली प्रसिद्ध है। इसमें पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएं उन्हें लाठियों तथा कपड़े के बनाए गए कोड़ों से पीटती हैं। दस दिन पहले होली का डंडा जिसे राजस्थान में प्रहलाद का रूप माना जाता है किसी खुले मैदान या चौराहे पर गाड़ दिया जाता है । इसके पास होलिका की अग्नि इकट्ठी की जाती है। पर्व के पहले दिन होलिका दहन होता है। इसमें लकड़ियां और उपले प्रमुख रूप से होते हैं।

कहीं कहीं गाय के गोबर से बने बडकुल्ले या भरभोलिए, जलाने की भी परंपरा है जिनके बीच में छेद होता है। इस छेद में में मूंज की रस्सी डाल कर सात भरभोलिए लेकर माला बनाई जाती है। दहन से पहले इस माला को बच्चों के सिर के ऊपर से सात बार घुमा कर फेंक दिया जाता है। रात को होलिका दहन के समय यह माला होलिका के साथ जला दी जाती ताकि होली के साथ भाइयों पर लगी बुरी नजर भी जल जाए। मगर शहरों से यह बड़कुल्ले और भरभौलिए अब गायब होते जा रहे हैं।

दिन ढलने पर शुभ मुहूर्त पर होली का दहन किया जाता है। इस आग में नई फसल की गेहूं की बालियों और चने के होले को भी भूना जाता है। होलिका का दहन समाज की समस्त बुराइयों के अंत का प्रतीक है। यह बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय का सूचक है। गांवों में लोग देर रात तक होली के गीत गाते हैं तथा नाचते हैं, पर आज यह सब गायब सा ही हो गया है। राजस्थान के लोगों से पूछिए आज भी वह घूमर नृत्य को याद करके होली से जोड़ते हुए आहें भरते हुए देखे जा सकते हैं।

कैसी-कैसी होलियां

भारत में होली का उत्सव अलग-अलग प्रदेशों में अलग अलग रंग ढंग से मनाया जाता है।

ब्रज की लट्ठमार होली

ब्रज की लट्ठमार होली और वृंदावन में भी पंद्रह दिन होली मनाई जाती है। बैठकी, धुलेंडी, ढोलजात्रा कुमाऊं की गीत बैठकी, में शास्त्रीय संगीत की गोष्ठियां होती हैं। हरियाणा की धुलेंडी में भाभी द्वारा देवर को मस्ती के साथ रंगने और उसे छेड़खानी करके सताए जाने की भी प्रथा है।

बस्तर की पत्थर मार होली

बृज एवं वृंदावन के क्षेत्रों में जहां लट्ठमार होली खेली जाती है वहीं मध्यप्रदेश के बस्तर इलाके में आदिवासी लोग टोलों बंट कर एक दूसरे पर पत्थर फेंकते हुए भी होली खेलते हैं । इन पत्थरों को बुराई का प्रतीक माना जाता है और मैं अपनी तरफ से अपने दोनों की बुराई को बाहर फेंकते हैं। इसी तरह नीदरलैंड में एक दूसरे पर टमाटर फेंक कर रंगने की प्रथा का भी एक त्यौहार है।

बंगाल की दोल जात्रा

बंगाल की दोलजात्रा चैतन्य महाप्रभु के जन्मदिन के रूप में मनाई जाती है। जुलूस निकलते हैं और गाना बजाना भी साथ रहता है। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र की रंग पंचमी में सूखा गुलाल खेलने, गोवा के शिमगो, में जलूस निकालने के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा पंजाब के होला मोहल्ला में सिक्खों द्वारा शक्ति प्रदर्शन की परंपरा है।

राजस्थान की गुलाबी 'गैर'

यदि गहरे गुलाबी रंग की चटक भरी होली देखनी हो तो राजस्थान और उसमें भी शेखावटी अंचल की होली से बेहतर नजारा कहीं और देखने में नहीं आएगा राजस्थान के चुरु सीकर झुंझुनू और जयपुर मिलाकर शेखावटी क्षेत्र के नाम से जाना जाता है इन इलाकों में गहरे पक्के गुलाबी रंग को बड़े-बड़े खड़ा हूं एवं बर्तनों में खोलकर होली के अवसर पर लोगों पर फैंका ही नहीं जाता है अपितु कई जगह तो लोगों को ही उस रंग में डाल दिया जाता है यह रंग इतना पक्का होता है कि होली के बाद हफ्तों तक भी इसका असर लोगों के चेहरों पर दिखाई देता है।

गुजराती होली

दक्षिण गुजरात के आदिवासियों के लिए होली सबसे बड़ा पर्व है, छत्तीसगढ़ की होरी में लोक गीतों की अद्भुत परंपरा है और मध्यप्रदेश के मालवा अंचल के आदिवासी इलाकों में बेहद धूमधाम से मनाया जाता है भगोरिया जो होली का ही एक रूप है।

बिहारी फगुआ

बिहार का फगुआ जम कर मौज मस्ती करने का पर्व है और नेपाल की होली में इस पर धार्मिक व सांस्कृतिक रंग दिखाई देता है। इसी प्रकार विभिन्न देशों में बसे प्रवासियों तथा धार्मिक संस्थाओं जैसे इस्कॉन या वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर में अलग-अलग प्रकार से होली के श्रृंगार व उत्सव मनाने की परंपरा है जिसमें अनेक समानताएं और भिन्नताएं हैं।

कमन, याओसांग व भगोरिया

तमिलनाडु की कमन पोडिगई मुख्य रूप से कामदेव की कथा पर आधारित वसंतोत्सव है जबकि मणिपुर के याआ. सांग में योंगसांग उस नन्हीं झोपड़ी का नाम है जो पूर्णिमा के दिन प्रत्येक नगर-ग्राम में नदी अथवा सरोवर के तट पर का वर्णन है।

साहित्य में होली रंग

प्राचीन काल के संस्कृत साहित्य में होली के अनेक रूपों का विस्तृत वर्णन है। श्रीमद्भागवत महापुराण में रसों के समूह रास का वर्णन है। अन्य रचनाओं में रंग नामक उत्सव मनाया जाता है।

बचाइए होली फीलिंग को

आज कैमिकल, गोबर कीचड़ आदि ने होली को बदरंग कर दिया है। यदि होली पर गाए बजाए जाने वाले ढोल, मंजीरों, फाग, धामार, चैती और ठुमरी जैसे पारंपरिक संगीत की समझ रखने वाले और पर्यावरण के प्रति सचेत लोग और संस्थाएं चंदन, गुलाबजल, टेसू के फूलों से बना हुआ रंग तथा प्राकृतिक रंगों से होली खेलने की परंपरा को बनाए रखें व इनके विकास में योगदान भी दें व रासायनिक रंगों के कुप्रभावों की जानकारी तो लोगों को दें तो होली के रंग सच में ही चटक हो जाएंगे और इससे भी बढ़कर होली को 'होली फीलिंग' यानी पावन भावना के साथ मनाया जाना बहुत जरूरी है जिससे आपस में सौहार्द एवं प्रेम कि श्री वृद्धि हो।

डॉ घनश्याम बादल

गांव का सर्वांगीण विकास हो सुनिश्चित

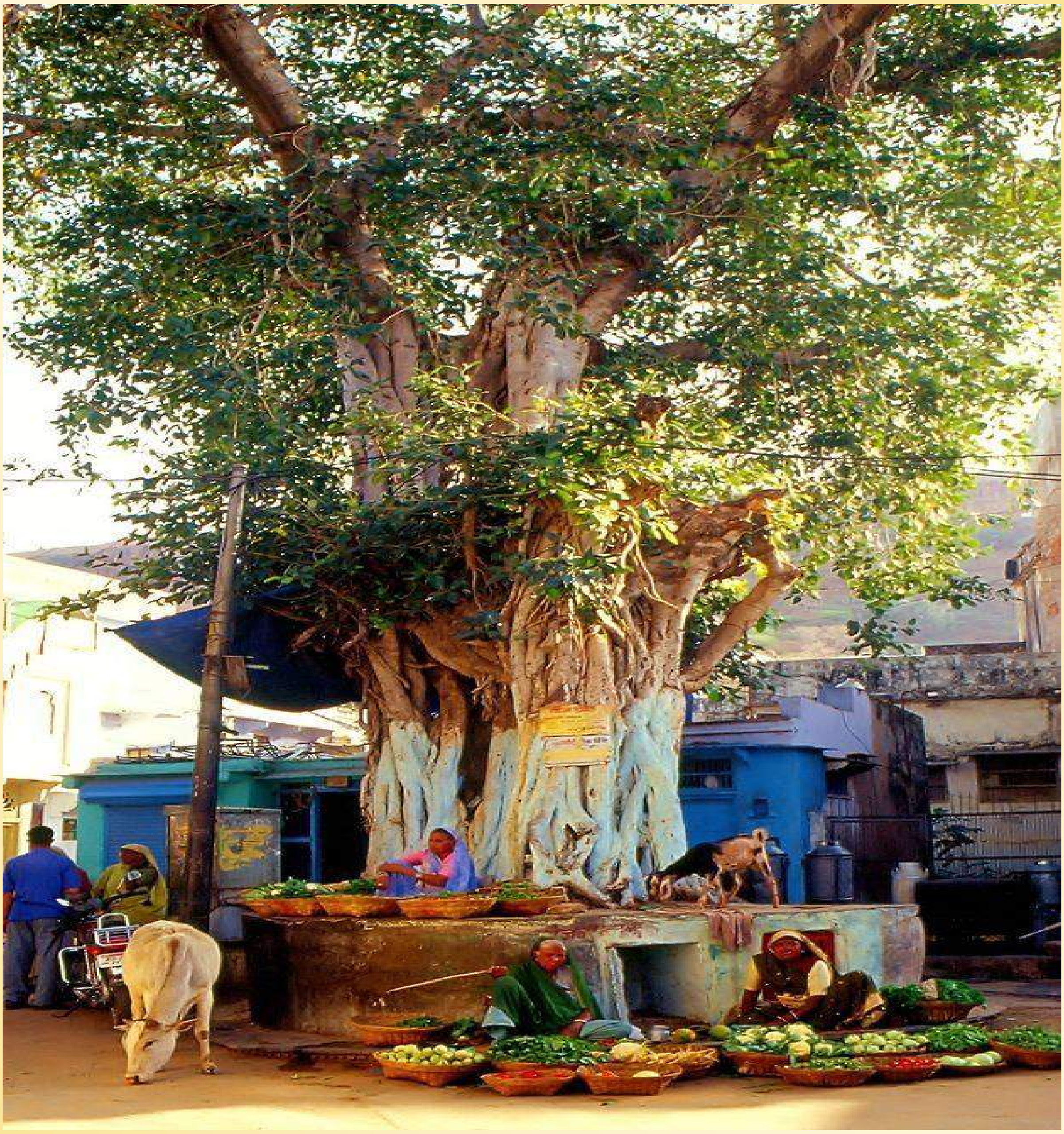

भारत कृषि प्रधान देश है! जिसकी अधिकतर जनसंख्या गावों में निवास करती है ! जिसकी 72% फीसदी आबादी कृषि पर निर्भर है! अगर हम राष्ट्र के विकास की बात आती है तो गांव और कृषि का विकास अहम हो जाता है! गांव भारत की आत्मा है जिस प्रकार आत्मा के बगैर शरीर का कोई अस्तित्व नहीं होता है उसी प्रकार गांव के बिना भारत का! सदियों से गांव भारतीय जीवन की धूरी तथा पालन पोषण करने वाला रहा है! भारत का

अस्तित्व सात लाख गांवो से है, जिनके आधार पर शहरी जीवन पोषण पाता है! आज भी गांव अपनी संस्कृति तथा वेशभूषा को बचाए हुए हैं! भारत में ग्राम सदा से स्वयं आत्मनिर्भर रहे हैं जिन का मुख्य आधार -कृषि,पशुपालन व परंपरागत उद्योग तथा स्वयं की सामाजिक व्यवस्था है! ग्रामीण स्थानीय संसाधनों का सदुपयोग एवं नियोजन करते हुए आत्मनिर्भर एवं स्वाबलंबी थे! अंग्रेजों ने इस स्वाबलंबी तंत्र में सेंध लगाकर इसे अपने नियंत्रण में लेने का काम किया! तरह-तरह के कानून तथा गलत नीतियां बनाकर भारत की रीढ़ की हड्डी पर प्रहार किया!

आजादी के बाद सरकार तो बदली पर कानून और नीतियां यथावत रही! गलत नीतियों के कारण आज 70वर्षो के बाद भी गांव अपनी बदहाली का रोना रो रहे हैं! इन नीतियों ने गांव और शहरों के बीच गहरी खाई और विषमता पैदा कर दी है, जिससे गांव सिकुड़ रहे हैं और रोजगार के लिये शहरों की तरफ जा रहे हैं और शहर बढ़ती आबादी के तले दबे जा रहे हैं! इसका कारण यह है कि सरकार ने गांवों के विकास की वजाय शहरीकरण पर केंद्रित रही! जिसका दुष्परिणाम आज हमारे सामने है! आज व्यक्ति परिश्रम, स्वावलंबन तथा स्वाभिमान जैसी परंपरा को छोड़ता चला जा रहा है! आज लोगों की मानसिकता ऐसी हो गई है कि कोई परिश्रम नहीं करना चाहता, पढ़ा हुआ युवक परिश्रम को हीन दृष्टि से देखता है! सरकारी छोटी नौकरियों में अपनी शान समझता है! जिसके परिणाम स्वरूप शहरों के पराश्रयी तथा घुटन भरे जीवन को अपनी नियति मान बैठा है!

यह कहना गलत नहीं है कि सरकार ने गांवों की बजाए शहरों को ही उद्योग के लिए चुनाएक ! समय ऐसा भी आया की मशीनीकरण और रासायनिक खादों के बल परहरित क्रांति की लहर अवश्य उठी, लेकिन इसका लाभ भी एक विशेष वर्ग को हुआजिस से संपन्न लो !ग और अधिक संपन्न तथा गरीब लोग और गरीब होते चले गए!

आज की स्थिति की बात करें तो खेती में अधिक उत्पादन के नाम पर जहरीले रसायन व कीटनाशको के अधिक मात्रा में उपयोग के चलते ज़मीन, जलवायु सब प्रदूषण की चपेट में हैं ! आज ज़मीन में जहरीले तत्वों की मात्रा अधिक होने के कारण भूमि अधिक बंजर हो रही है तथा जो भी फल, सब्ज़ी एवं खाद्य पदार्थ हम उगाते हैं उनमें भी इन तत्वों का आना निश्चित होता है ! जिस के भयंकर दुष्परिणाम को देश की एक बड़ी आबादी भुगत रही है ! आज मनुष्य की भोगवाद की प्रवती में अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरण का संतुलन बिगाड़ रखा है !

व्यक्ति आज अपनी भूमि तथा संस्कृति की जडों से दूर होता चला ला रहा है। यह विकास मनुष्श् को बाहर से तो अधिक उपज देने वाला तथा अंदर से खोखला करने वाला है। आज सब कुछ जानकर भी मानव जहरीले विषाक्त पदार्थ खाने को मजबूर है। आज मानव ने जो विकास किया है उससे हमें निष्कर्ष निकालना चाहिये कि हमने पाया कम और खोया ज्यादा है।

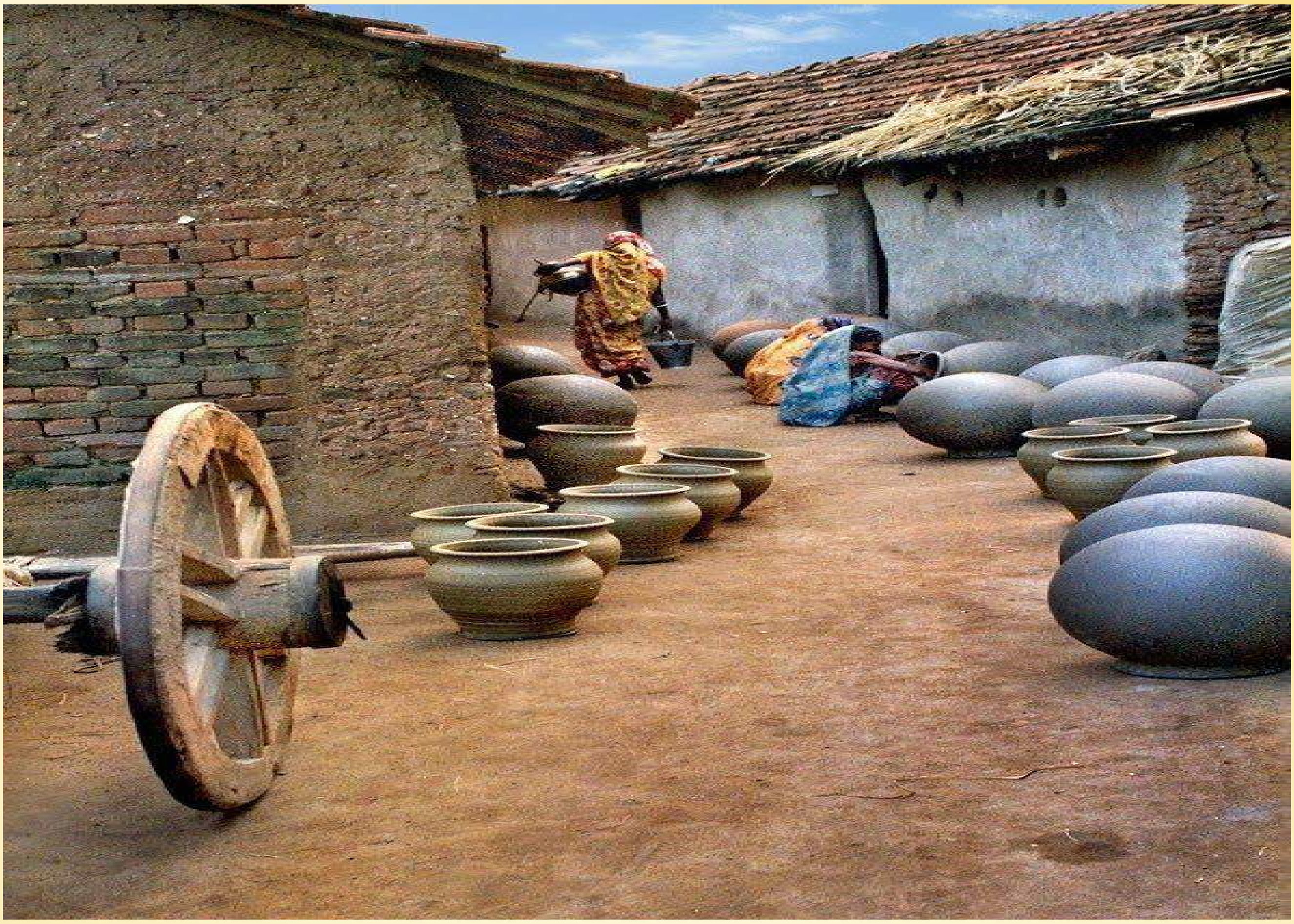

आज इस विकास ने गांवों को और अधिक उजाडने का कार्य किया है। गांवों में जो छोटे छोटे उद्योग चलते थे जिससे व्यक्ति अपना गुजारा भत्ता तथा अपने परिवार को चलाने में सक्षम होता था । वह सब आज या तो बन्द हो गए हैं या उजड गए हैं । इसका कारण बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का बडे बडे शहरों में प्रवेश है। ऐसे में रोजगार की तलाश में गांवों से शहरों की ओर पलायन बढता जा रहा है। आज कई प्रान्तों की स्थिति इतनी भयानक है कि गांवों में बडे बुर्जुग ही बचे हैं । पढी लिखी पीढी रोजगार के चक्कर में शहरों में बस गई है। और गांव वापिस आने में संकोच की स्थिति में है। उजडते ग्रामीण जीवन की ऐसी स्थिति में देश के विकास को कैसे संतुलित तथा संतोषजनक कैसे कहा जा सकता है। आज इन सारी स्थितियों को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि शहरों के साथ साथ गांवों के विकास पर जोर दिया जाए तथा वहां रोजगार के अवसर और उद्योगों को लगाया जाए जिससे ग्रामीण लोग शहरों की तरफ पलायन न करें। विकास का लाभ एक वर्ग या किसी व्यक्ति विशेष की बजाय सभी तक पहुंचे तथा छोटे छोटे किसान भी इससे लाभन्वित हों । इसके साथ साथ मानव को विषाक्त पदार्थों से दूरी बनानी होगी तथा जैविक खेती और प्राकृतिक खेती का महत्व समझना होगा तथा अपनाना होगा। आज दोहन शोषण की बजाय उसे संरक्षित करें और

प्राकृतिक जीवन की सुरक्षा कवच को नष्ट करने से बचें । सरकार को चाहिये कि ऐसी नीतियां तथा कानून बनाएं जिससे शहरों के साथ साथ गांव स्वावलम्बी बने तथा देश का प्रत्येक नागरिक आत्मनिर्भर बने। जिससे आर्थिक विषमता की खाई पट सके । और लोग पुनः गांवों की ओर लौटें जिससे प्रकृति की स्नेहमयी छाया में विकास का नया अध्याय लिखा जा सके । व्यक्ति संयम सादगी त्याग भाव से अपना जीवन जी सके ।

बृजेश कुमार

अग्निपथ

जीवन के संघर्ष का ही नाम है ये अग्निपथ,

इंसान के उच्च तत्वों में प्रधान है ये अग्निपथ,

समाज के व्यवहार का सम्मान है ये अग्निपथ,

संघर्ष के विचार का ही नाम है ये अग्निपथ,

ज्ञान की हर उपासना का नाम है ये अग्निपथ,

रास्तों की स्वर्णिम रोशनी का नाम है ये अग्निपथ,

ऋषि यों के ज्ञान की तलवार है ये अग्निपथ,

हर भंवर से उभारने का नाम है ये अग्निपथ,

ज्ञान के प्रवाहो का सार है ये अग्निपथ,

अविद्या के विनाश का ही नाम है ये अग्निपथ,

अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ!

राहुल दीवान

अगर न होती।

हमारी जिंदगी में शायद सब कुछ सही हो सकता था,

अगर हमारी जिंदगी में कुछ चीजें गलत न होतीं।

फर्क क्या होता है चिराग और ज्योति में,

दोनों ही घर को रोशन करते हैं।

मैं भी अपने घर को पूरी उम्र रोशन कर सकती थी,

अगर मैं अपने घर की ज्योति न होती।

वैसे तो मम्मी पापा हमें बराबर प्यार करते हैं,

मगर पूरे परिवार से प्यार, इज्जत और

सम्मान मुझे भी मिल सकता था,

अगर मैं अपने पापा की लाडली न होती।

मैं भी अपनी माँ के जिगर का टुकड़ा बन सकती थी,

अगर मैं अपने पापा के दिल की दुआ न होती।

मैं भी अपने परिवार की इज्जत, मान और सम्मान

के लिए पूरी दुनिया से लड़ सकती थी।

अगर मैं अपने परिवार की इज्जत और मान मर्यादा न होती।-

न जाने कितने ही सवाल होतें हैं हमारे लिए,

मैं हर एक सवाल का जवाब बखूबी लोगों को दे सकती थी,

अगर मैं अपने ही परिवार के लिए एक बड़ा सवाल न होती।

मैं भी अपने माँबाप का नाम रोशन कर सकती थी -,

अगर मैं अपने ही नाम के दूसरे हिस्से से अनजान न होती।

मैं भी अपने पापा के दिल का सुकून बन सकती थी,

अगर मैं उनके दिमाग का एक बोझ न होती।

मैं उनकी हर एक जिम्मेदारी को उनके

कंधे से कंधा मिलाकर बांट सकती थी,

अगर मैं उनकी एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी न होती।

वैसे तो हमारे परिवार में बेटा- बेटी में कोई फर्क नहीं मानते हैं,

लेकिन मेरे माँ बाप कुछ और दिन बेफिक्र होकर अपने पास रख सकते थे,

अगर मैं एक लड़की न होती।

न जाने कितने दिनों बाद मिलने आ पायीं हूँ अपने मम्मी पापा से,

अब मन तो नहीं हो रहा आप दोनों से दूर जाने का,

मैं कुछ और देर आप दोनों के पास ठहर जाती,

अगर मैं किसी की माँ न होती।

मैं भी अपने मम्मी पापा की जमीन जायदाद की हकदार होती,

अगर हम बेटियां अपने मम्मी पापा की जीवन भर की कमाई न होती।

अमरेंद्र कुमार

“कोरोना”

विश्व में कोरोना ने तबाही मचाई,

चीन से शुरू जंग, स्पेन पहुंचाई।1।

बुहान से बिहान, जापान रात घहराई,

इटली में महामारी, अमरीका है हिलाई।2।

चीन का कोरोना, ब्रिटेन में है भारी,

प्यार में न जीते दे, युद्ध में न हारी।3।

विश्व विधाता हे ! विज्ञानी बतावा,

कैसे जीवन रही, अब तू ही सुझावा।4।

सब लाॅकडाउन रहा, मत अप-डाउन रहा,

सादा भोजन करा, सीधा जीवन रहा।5।

जग-जीवन बचावा, अब हाथ न मिलावा,

करा दूर से प्रनाम, स्व संस्कृति अपनावा।6।

धरा धीरज मोहन, उदित होई किरन,

समय है तो कठिन, पूरा होई मिशन।7।

डा. मोहनसिंह

मेरी हमदम

मेरी पत्नी मुझ पर हरदम बरसा करती है,
सावन भादो की झड़ी भी मुझे कमतर लगती है,

घर में हर तरफ चकरी सी घूमा करती है,
शाम तक थकी हारी चिड़ी चिड़ी सी लगती है,

मैं सैर कराऊँ तो गुल बहार लगती है,
हीरे का हार पहनाऊँ तो इतराती फिरती है,

जीवन की नौका जब भंवर में फैरी लगाती है,
मेरी हम सफर बारी बारी से संग मेरे चप्पू चलाती है,

इसकी प्यार भरी झिड़की भी भली लगती है,
जब पल्लू से मेरे माथे का पसीना पोंछने लगती है,

वो मेरी हमदम मेरी दोस्त लगती है-,
मेरी परेशानी में मेरे संग खड़ी होती है!

अर्विना प्रयागराज

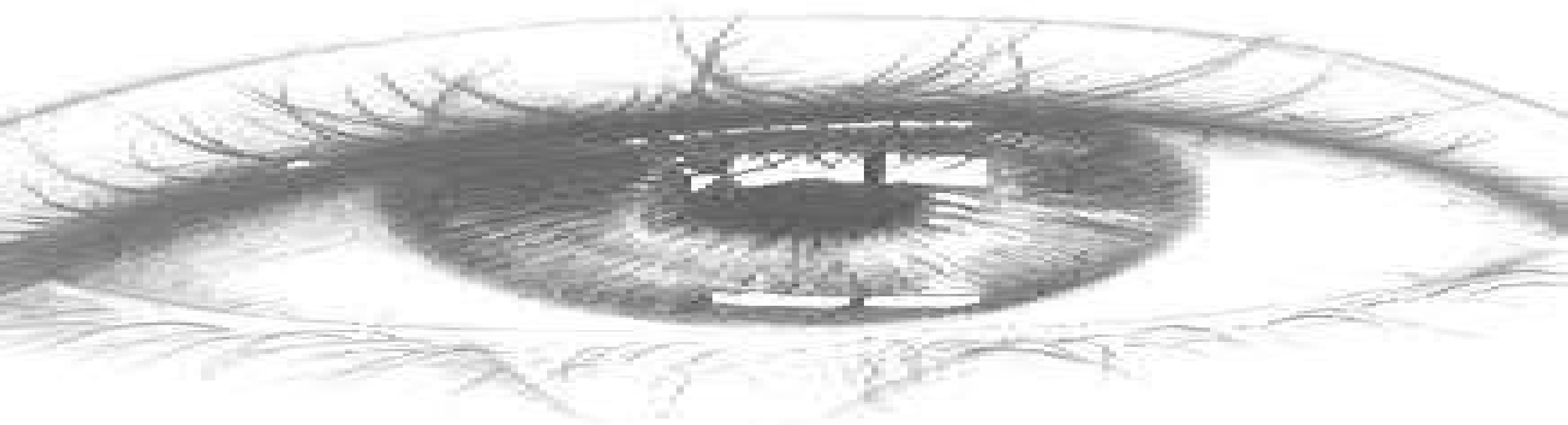

खारा पानी

रोने के लिये मैं अक्सर
बारिशों का इन्तज़ार करती हूँ
आँसूओं में घुल कर
बारिशों का पानी खारा हो जाता है ।

यकीनन तुम भेद नहीं कर पाओगे
दोनों पानियों में
देखने के बाद भी
मेरी आँखों तैरते स्याह बादल

तुम प्रतीक्षातर रहोगे
प्रेम बीज पल्लवित पुष्पित होने को ,
और

यह नियम भी तुम

भूल जाओगे

कि

उसर भूमि में कोई बीज नहीं पनपता

खारी बारिशें

धरती को उसर कर देगी ।

यह दंड़ देती हूँ मैं तुम्हें

तुम्हारी अवहेलनाओं का ।

लतिका बत्रा

गीत

किस विकास के भ्रम में

किस विकास के भ्रम में हम सब खेल रहे अंगारों से।
पर्यावरण हमें काटेगा दोधारी तलवारों से।।

वाहन इतने अधिक सड़क पर, वायु-प्रदूषण भारी है।
जंग फेफड़ों की शहरों में, श्वांस-रोग से जारी है ।
बच्चा-बच्चा जूझ रहा है, घातक रोग प्रहारों से।।

वृक्ष कट रहे, बढ़ा ताप इस धरती को झुलसा देगा।
बड़े-बड़े हिमखंडों को भी, तेज़ी से पिघला देगा।
तल सागर का बढ़ जाएगा, पिघले जल-भंडारों से।।

सागर-तट पर बसे नगर सब, संकट में आ जाएँगे।
इतने लोगों को धरती पर, फिर से कहाँ बसाएँगे।
काँप उठा है अपना मन तो, ऐसे मात्र विचारों से।।

हमने अपनी सारी पावन नदियाँ दूषित कर डाली।
प्राणदायिनी जल-धाराएँ, सब कचरे से भर डाली।
बूँद-बूँद जल माँग रहे हैं, रो-रोकर सरकारों से।।

जहाँ सुलभ है अभी, वहाँ हम पानी खूब बहाते हैं।
रोज़ सैकड़ों लीटर जल से, घर-आँगन धुलवाते हैं।
आनंदित हैं बाथरूम में खुले पड़े फ़व्वारों से।।

पर्यावरण-हितैषी मिलकर सेमिनार करवाते हैं।
अख़बारों में जब-तब अपने इंटरव्यू छपवाते हैं।
वातावरण बनाते रहते शुद्ध भाषणों-नारों से।।

बृज राज किशोर 'राहगीर'

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

साधना की शादी संदीप के साथ बड़ी धूमधाम से हुई,जितने लोगों ने करीब से इस शादी समारोह को देखा , बस यही कहा-क्या जोड़ी है ,रब ने बना दी जोड़ी !दोनों के चेहरे पर खुशियों की रंगत दुधिया रोशनी में दौड़ती नजर आई ! शादी के एक-दो साल बाद वही हुआ जो अक्सर होता है -चार दिन की चाँदनीऔर फिर अँधेरी रात ।

साधना के जीवन में अंधेरी रात उसके पेट में पल रहे बच्चे के परीक्षण के बाद आई, जिसकी कल्पना उसने कभी अपने जीवन में नहीं की होगी ,जहां घर में बड़े प्यार के साथ रह रही थी ,उसी प्यार को अब नजर लग गई दरअसल संदीप ,साधना के पेट में पल रहे बेबी शिशु को नहीं रखना चाहता था, वहीं साधना हर हाल में उसे बचाना चाहती थी- वह अपने पेट पर हाथ रख कर कहती थी जब तक मैं जीवित हूं ,तुम्हें कुछ नहीं होगा ,तुम्हारे लिए जूठन धो लूँगी,स्टेशन पर भीख मांग लूंगी, पर तुझे कुछ नहीं होने दूँगी ।

संदीप की मां भीअपने बेटे की तरफ थी, वह भी पहला संतान बेटा ही चाह रही थी , बड़े अरमान पाल रखी थी ,तभी तो बात -बात पर कहती थी-देखो संदीप ,बहू को बेटा ही पैदा करने को कहना ।यही विडंबना है !नारी समाज की ,सास बनते ही अपना समय भूल जाती है ।सबिया कहती है कि एक डॉक्टर को घर पर बुला लेती हूँ फिर कोई दिक्कत नहीं होगी ,गांव की दो चार महिलाओं का नाम भी गिनवाती है और कहती है , देखो उन लोगों ने भी करवाई थी और कोई दिक्कत नहीं हुई थी ।

साधना एक मुश्किल दौर से गुजर रही थी आखिरकार उसने निर्णय लिया कि मैं इस अजन्मे प्राणी की माँ हूँ और पढ़ी-लिखी माँ भी । ऐसा करना ठीक नहीं है !इसी सोच में आज रात के 1:00 बजे तक जगी थी,वह लगभग एक महीने से मानसिक रूप से टॉर्चर भी तो हो रही थी अंत में तंग होकर उसने घर से भागने का निर्णय लिया ,क्योंकि घर के सभी सदस्यों से उसका भरोसा टूट गया था उसके मन की बात कोई सुनने को तैयार नहीं था ,अपनी पीड़ा को लोग अक्सर दोस्त व सहेली से ही सुनाते हैं ,साधना भी अपनी सहेली को हर एक बात बताती थी ,उसकी सहेली ही उस काली अंधेरी रात की एक रोशनी थी पर कुछ देर सोचकर ठिठक जाती कि उसके भी बच्चे हैं , पति हैं । फिर भी उस सहेली का सहारा पाकर जब घर के सभी लोग सो रहे थे तो एक टार्च लेकर अपने घर से सहेली के घर तरफ भाग चली ।

साधना की सहेली संध्या सिलाई ,कढ़ाई, बुनाई का कार्य करती थी उसने साधना को भी इस कार्य में निपुण कर दिया साधना ने अपनी सहेली के घर सुंदर बच्ची को जन्म दिया ,सभी ने नाम रखा - चाँदनी । एक सास का जो भी कर्तव्य होता है ,उसकी सहेली ने पूरी की थी ,इस तरह दोनों सहेलियां

जुड़वां बहन की तरह रहती थी, संदीप भी मां के साथ रह रहा था, उसे भी अपनी गलतियों का एहसास होने लगा था पर उसकी गति तो साँप-छछूंदर की तरह हो गयी थी ।

एक दिन साधना अपनी बेटी और सहेली के साथ धनबाद मार्केटिंग करने निकली ,शायद कोई त्यौहार रहा होगा ,साथ में चाँदनी भी थी जो बड़ी चुलबुली हो गई थी बच्चों के हिसाब से अपनी मां से कुछ मांगने लगी तब उसकी मां कहती थी एक दिन तुम्हारे पापा संदीप जी आएंगे ,तब मन में जो चीजें खरीदने की हो खरीद लेना, जी भर कर मांग लेना, उसे विश्वास था कि मेरे बगैर संदीप को जिंदगी ने बहुत कुछ सिखा दिया होगा।

अभी बाजार में साधना और उसकी सहेली श्रृंगार के कुछ सामान खरीद ही रही थी कि तभी दौड़ कर चांदनी एक आदमी पर अपने बोतल का जल डालती है ,जल पडते ही बेहोश आदमी को होश आ जाता है ।नन्ही सी बच्ची को धन्यवाद देने के लिए उस के पास शब्द कम पड़ने लगते हैं तब वह केवल पूछता है कि –

हे फूल -सी बच्ची तुम्हारा क्या नाम है ?

चाँदनी-मेरा नाम चाँदनी है ।

तुम्हारे माता-पिता का क्या नाम है ?

चाँदनी- मेरे पापा का नाम संदीप और मम्मी का नाम साधना है ।

संदीप की आँखों से पूरा पर्दा हट गया था, उसने चाँदनी को गले से लगा लिया,तब तक उसकी माँ भी आ गई थी दोनों की नजरें मिली ,तो गल बाहें होने से कोई नहीं रोक पाया ।कितने वर्षों के बाद का मिलन था वह, छोटी बच्ची देखती रही, भौचक्का रह गई थी ,उसी समय उसकी माँ ने बताया कि चाँदनी !यही तुम्हारे पापा हैं ।

अब तो संदीप साधना को अपने घर ले जाने की जिद संध्या से करने लगा और अपने करतूतों के लिए सैकड़ों बार माफी मांगा । आज संदीप अपनी पुत्री और बीबी को पाकर बहुत खुश था उसे लगा कि पश्चाताप ने उसके सारे पाप धो डालें उसके आंसुओं से मन की सारी गन्दगियाँ बह गईं ,वह अपनी पत्नी और बच्चे को लेकर घर की ओर चला । घर के बाहर जाकर आवाज लगाई , देखो मां कौन आई है! उसकी मां सबिया ने दरवाजा खोली और जितनी देर में खोली उससे कम समय में ही बंद कर दी ।सबिया अंदर चली गई ।

सबिया के शब्द -आ गई ना !

कहाँ जाएगी !

गुस्से की अग्नि चेहरे पर धधक रही थी ।

माँ को ऐसा देखकर संदीप ने भी तेवर बदल ही डाला था ।

संदीप –

माँ, साधना अपने घर के चौखट की शान है ।

इज्ज़त है ।

एक औरत ही दूसरी औरत को न समझ पाये तो ,इससे बड़ा अफसोस क्या हो सकता है ....

बहुत दिनों से तुम्हारी बातों को सुनता रहा इसी कारण आज घर होते हुए भी बेघर हो गया हूँ ।पुत्र की डांट से माँ की आँखें खुल गई ,गलती का एहसास हुआ, तुरंत उसने अपनी बहू और पोती को घर के अंदर ले गयी, अपने हाथों से बनाए पकवान को खिलाई ,वह इतनी खुशी थी कि मानो उसकी सीता बनवास के 14 साल पूरी कर लौटी हो ।

साधना के बुरे दिन खत्म हो गए थे फिर से वही हरियाली, वही सुख के दिन ,पहले जैसा ही प्यार, गहनों से लदी झमाझम अपने घर आँगन को एक किए रहती थी ,उसके पति ने सिलाई की मशीन धनबाद से ला दिया था जिससे पड़ोस की महिलाओं के कपड़े सिलकर कुछ रुपये कमा लेती थी । अब अच्छे से खाने ,पहनने लगी थी ।वह चाहती थी कि चाँदनी का एक अच्छे स्कूल में दाखिला हो जाय,संयोग से केंद्रीय विद्यालय मैथन डैम में नामांकन की लॉटरी हुई और चांदनी का चयन हो गया । केंद्रीय विद्यालय मैथन डैम के प्राचार्य उमेश कुमार ,हेड मास्टर पंकज वत्स की देखरेख में उन दिनों काफी फल-फूल रहा था उसकी ख्याति पूरे क्षेत्र में थी ,अनुशासन के कारण विद्यालय की एक अलग पहचान थी विद्यालय में किसलय सर,ठाकुर सर, गोपाल कृष्ण झा सर,राजेश,पांडेय सर,उपाध्याय सर, संगीत की मेम, तलहद सर,निपा मेम,अनिल सर,प्रार्थना मेम, मिश्रा मेम, मुंडू सर ,एक से बढ़कर एक स्तंभ थे,जहाँ अपने बच्चों का नामांकन पाकर अभिभावक गण बहुत खुश होते थे, साधना और संदीप भी काफी खुश हुये । अब चांदनी केंद्रीय विद्यालय से आकर मम्मी को अच्छी-अच्छी कविताएं सुनाने लगी ,उसकी मिश्री घोल बोली से घर के सभी लोग आनंदित होने लगे।टुपक-टुपक कर बोलने वाली चाँदनी जब प्यार से दादी मां कहती थी तो दादी अतीत में चली जाती और पश्चाताप से भर जाती थी

कुछ दिनों बाद चाँदनी का जन्मदिन आया । सभी ने उस नन्हीं परी का जन्मदिन मनाया तथा घर पर बड़े-बड़े पोस्टर लगाए गये, उनमें से एक पोस्टर में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा था -

बेटी बचाओ ,बेटी पढ़ाओ ।

नेतलाल यादव

शब्द शब्द

अस्सी साल की मौसी ! देह जैसे हड्डियों का दांचा रह गयी थी ! पर उत्साह बहुत तगड़ा था ! कितनी तेज़ धूप और कितनी छाँव झेली उन्होंने ! वो हमेशा हिम्मत ही देती ! मुस्कुराती रहतीं थी ! तीन बेटे और दो बेटियों की माँ ! माँ के रूप में सब कुछ किया उन्होंने ! बिन पैसे बेटे को डॉक्टर बनाने के लिए जीवन सिलाई मशीन चलते चलते कब खप गया पता ही नहीं चला ! मौसी अब आँखों से बहुत कम देख पाती हैं ! नब्बे साल की हो गयी हैं ! बेटा डॉक्टर बन गया ! आँखों के स्पेशलिस्ट सीनियर सर्जन ! अपने जिले में सबसे वरिष्ठ पद पर पहुँच गए !

इस यात्रा और मंज़िल में वो माँ को भूल गए ! एक दिन लम्बी चिट्ठी लिखी उन्होंने मौसी को , तूने तो माँ मुझे मुझे इसलिए पढ़ाया कि बकरा काट सको एक दिन ! ताकि तुम मुझे इस्तेमाल कर सको !!ये असली ह्रदयघात था मौसी ने रो रो कर बताया देखो मेरे बेटे ने क्या लिखा है मुझे !मुझे उसके पैसों की कहाँ जरूरत थी ? मुझे लिखा है माँ किया hi क्या h तुमने मेरे लिए ! दुनिया के सब माँ बाप यही करते हैं,, कुछ अलग तो नहीं किया तुमने !

आँखे भर आई और दिल भी इतना कि बाहर का शोर सन्नाटा बन गया मौसी के लिए ! दुनिया के कोई शब्द मरहम नहीं बन सकते थे, दर्द देने वाला उन्हीं के जिगर का टुकड़ा था, जिसे आंखों का डॉक्टर बनाने के लिए माँ ने अपनी आंखों की रोशनी खो दी वो बेटा हर आँख का दर्द समझ पाया सिर्फ अपनी माँ की आँखों में ही झाँक न सका पता नहीं उसे वरिष्ठ डॉक्टर कह पाना कितना न्यायोचित होगा?

गांव के लोग डॉ को सर आँखों पर बिठाते थे ! उन्हें अच्छा इलाज मिलता था, बदले में जिससे जो बन पड़ता, वही करता ! जीरे की खेती होती थी, जी भर कर डॉ साहब को भेंट की जाती ! बहुत जल्द ही आलीशान कोठी बनवा ली ! माँ पिताजी और परिवार में किसी भाई बहन की याद नहीं आई कभी !चकाचौंध ने सब भुला दिया ! मौसी के पूरे जीवन की मेहनत ने बेटे को डॉ बना दिया पर वो आज भी बहुत गरीब है ! उनका डॉ बेटा धनवान बन गया !

मौसी एक क्षण भी बेटे की वो चिट्ठी भुला ना सकी ! दूध पिलाने वाली माँ के कलेजे को वो शब्द शब्द चीर कर रख देता,

तूने तो माँ मुझे बकरा समझ कर पाला पोसा कि बड़ा होने पर मुझे काट सकें...........

तूने किया ही क्या है.......

वो शब्द शब्द मौसी के कानों को, हर रोज़, हर पल सुनाई देते ही रहते ! उनके दर्द की मात्रा को दुनिया में कोई डॉ नाप नहीं सकता ! ना ही कोई इलाज कर सकने वाला डॉ है, क्योंकि जख्म देने वाला तो...

मौसी इंदिरा अपनी नौ बहनों में से पांचवे नंबर पर थी ! नाना नानी बेटियों की शादी करने से पहले ही चले गए ! एक भाई यानि मामाजी ने सब बहनों की शादियां करवाई ! उस जमाने में बेटियों को ज्यादा पढ़ाया नहीं जाता था, जल्द शादी कर दी जाती थी ! कुछ बनने के सपने बेटियों की आँखों के लिए नहीं बने थे ! आठवीं तक पढ़ाया गया मौसी को ! मामा जी अच्छे समृद्ध सम्पन्न जीवन जीते थे लेकिन उनपर नौ बहनों की शादी की जिम्मेदारी थी!

मामा जी ने मौसी के लिए जो वर चुना, वो गोलगप्पे बेचते थे ! बहुत गरीब घर में शादी कर दी गयी ! तब से अभाव मौसी के जीवन का हिस्सा बन गया था !"! सबसे बड़े बेटे से बहुत ज्यादा प्यार था उन्हें ! उन्होंने ठान लिया कि कितनी भी कमी है पैसे कि पर हरीश तो डॉ बनेगा ! पी. एम. टी. की फीस से हर परीक्षा में बेटे के पीछे ढाल बन कर ख़डी रही वो ! जितनी आगे की पढ़ाई फीस उतनी ही ज्यादा होती थी ! मौसी के दिन भर के काम से उतना पैसा नहीं निकलता था, वो अब रात भर जाग कर सिलाई करने लगी ! उनकी तपस्या उस दिन मानो पूरी हो गयी ज़ब हरीश का रिजल्ट आया, वो पास हो गया वो भी अच्छे नम्बरो से ट्रैनिंग'! के लिए जोधपुर बुलाया था ! एक साल तक ट्रैनिंग के बाद नियुक्ति मिलनी थी ! मौसी ने हर जरूरी व्यवस्था की और भेज दिया जोधपुर ! माँ ने अपने मोह को, ममता को ही नहीं बल्कि जीवन को भी एक तरफ रख दिया उसे डॉक्टर बनाने के लिए लेकिन सवाल तो ये है कि तुमने किया ही क्या है?

कुछ कुछ ऐसा भी होता है जो शब्दों की पहुँच से बहुत दूर होता है, उसे कोई पकड़ नहीं सकता ! दिलों की जुबां मौन होती है, जो केवल उसे सुनाई दे सकती है, जो सुनना चाहें ! सच्चे दिल की आवाज़ ईश्वर की आवाज़ जैसी होती है ! बहुत गहरी ! और बहुत धीमी ! जिसे चाह है, वो सुन ही लेता है ! मौसी की बूढ़ी आँखों में कितने गहरे शब्द समा गए जिन्हें वो अब लगातार सुनती ही रहतीं हैं,,, कभी नहीं भूलती एक क्षण के लिए भी नहीं !

शब्द शब्द ही उनके जीवन का अर्थ है अब!

डॉ शिवा धमेजा

ग़ज़लें

(1)

एक अंजान सफ़र पर निकला ।
मैं तेरी याद पहन कर निकला ।।

चोट खा खा के दुआएँ लौटीं ।
जिसको पूजा वही पत्थर निकला ।।

पी गया ख़ून पसीना मेरा ।
कितना कमज़र्फ़ समंदर निकला ।।

जब भी निकला वो अयादत को मेरी ।
ले के अल्फ़ाज़ के ख़ंजर निकला ।।

मैं तेरी दीद की हसरत ओढ़े ।
जिस्म की क़ैद से बाहर निकला ।।

मेरी मैयत को लगाया कांधा ।
ग़ैर था आप से बेहतर निकला ।।

(2)

ज़ीस्त के हर इक वरक़ पर तल्ख़ियाँ लिखता रहा ।
वक़्त चेहरे पर हमारे झुर्रियाँ लिखता रहा ।।

लोग लिखना चाहते थे फ़ासलों का क़त्लेआम ।-
बादशाहे वक़्त लेकिन दूरियाँ लिखता रहा ।।

क़ाफ़िलासालार उसकी बेबसी के जिस्म पर ।-
रोज़ अपनी पुरहवस मनम-ानियाँ लिखता रहा ।।

आबोदाना ढूँढने सारे परिंदे उड़ चले ।-
और इक बूढ़ा शजर तन्हाइयाँ लिखता रहा ।।

लोग सादालौह थे करते रहे उस पर यक़ीं ।-
वो मगर अय्यार था अय्यारियाँ लिखता रहा ।।

वो कि मेरी रूह में बोता रहा बेताबियाँ ।
मैं कि अपने होंटों पे ख़ामोशियाँ लिखता रहा ।।

जाने क्यों जावेद उस पर ही रहा मरता ये दिल ।
जो मेरे हर गाम पर दुश्वारियाँ लिखता रहा ।।

(3)

जंग खुद से हर घड़ी करनी पड़ी ।
यूँ बसर ये ज़िन्दगी करनी पड़ी ।।

तंगदस्ती ने सताया इस क़दर ।-
ख़्वाहिशों को ख़ुदकुशी करनी पड़ी ।।

थे फटे कपड़े बहुत हालात के ।
दे के जाँ बख़ियागरी करनी पड़ी ।।

कामयाबी की दुल्हन के वास्ते ।
वक़्त से ख़न्जरज़नी करनी पड़ी ।।

सच बड़ा पुरहौल ऐ था । 'जावेद'
आइनों से बेरुख़ी करनी पड़ी ।।

(4)

दिल में नफ़रत की आग पाले हम
हो गए भीड़ के हवाले हम

हड्डियाँ तक निचोड़ डाली गईं
बन गए अपनें के निवाले हम

जाने किसकिस मुकाम से गुज़रे-
पीठ पर ज़िंदगी को डाले हम

अब तो मुंसिफ़ भी ख़ुद नहीं महफ़ूज़
किस को दिखलाएँ दिल के छाले हम

हो गया कोई रूह पर क़ाबिज़
रह गए मोरचा संभाले हम

लोग अंधेरों के पुजारी थे
ले के फिरते रहे उजाले हम

कोशिशें तो बहुत हुईं जावेद
टल न पाए किसी के टाले हम

डा. हातिम जावेद

थूक

वह घबराकर उठ बैठा। इतनी सर्दी में भी उसका बदन पसीने से तरबतर था। एक झटके में उठा और आईने के सामने जा खड़ा हुआ।चेहरे पर हाथ फिराकर देखा, सब ठीक था। उसने एक गिलास पानी पिया और सोचा," उफ़, कितना ख़ौफ़नाक सपना था?"

वह एक बड़ा हेयर-ड्रैसर है, शायद देश का सबसे नामी और अमीर हेयर-ड्रैसर। देश के हर बड़े शहर में उसके सैलून हैं। विदेशों तक में अपने नाम की फ्रैंचाइज़ी दे रखी हैं। बाप-दादा के समय से चला आ रहा है धन्धा। दादा तो अंग्रेजों के यहाँ जाते थे बाल काटने। अब्बा भी प्रधानमंत्रियों और राष्ट्रपतियों के यहाँ जाकर बाल काटते रहे। अकूत सम्पदा छोड़कर गए। अब भी सालाना आमदनी दो सौ करोड़ के ऊपर।

दादा और अब्बा ने तो शालीनता नहीं छोड़ी, पर उसका दिमाग़ आख़िर फिर ही गया। पैसा और कामयाबी किसका सिर न फिरा दे? अहंकार हर लहजे में झलकने लगा। अक्सर मोटी फ़ीस लेकर जगह-जगह सेमीनार करने जाता। दो-दो हज़ार का टिकिट लेकर सैलून चलाने वाले या खोलने की इच्छा रखने वाले उसका हुनर देखने और सीखने आते। अभी चार दिन पहले एक छोटे शहर में ऐसी ही एक सेमीनार में बुलाया गया। बड़ी संख्या में महिलाएँ उपस्थित थी, उसे अच्छा लगा।

शो शुरू हुआ। वह धाराप्रवाह बोल रहा था कि एक महिला ने कुछ जिज्ञासा प्रकट कर दी। बस, वह चिढ़ गया। जाहिरा तौर पर तो चुप रहा पर मन ही मन उस महिला के प्रति विद्वेष से भर गया। अगले एक एक्ट के लिए उसने एक वालंटियर की माँग की और उसी महिला को स्टेज पर बुला लिया। उसके मन में भरे ज़हर से अनजान महिला ख़ुशी-ख़ुशी मंच पर आ गई। उसने महिला को बाल काटने वाली कुर्सी पर बिठाया और उसके बाल संवारने लगा। यकायक उसने यह कहते हुए कि अगर सैलून में पानी न हो तो आप ऐसा भी कर सकते हैं, महिला के बालों में थूक दिया। इस बात पर हंगामा मचना चाहिए था, पर किसी ने प्रतिरोध नहीं किया। लेकिन किसी ने घटना की वीडियो बना ली और सोशल मीडिया पर वायरल कर दी। महिला ने भी अपने सम्मान पर आई इस आँच के खिलाफ़ थाने में एफ़आइआर कर दी। मामला न केवल प्रिंट मीडिया में वरन टीवी पर भी तूल पकड़ गया। महिला आयोग और संगठनों ने इसका संज्ञान लिया। सोशल मीडिया पर लोग उसके मुँह पर थूकने की बात करने लगे। बात बढ़ते देख उसने बड़ी बेशर्मी का प्रदर्शन करते हुए अदा के साथ माफ़ी माँग ली।

कल रात जब डिनर करके वह सोने गया तो यही सब उसके दिमाग़ में चल रहा था। पता नहीं कब आँख लगी। अचानक उसने देखा कि वह भागा जा रहा है, औरतों का एक हुजूम पकड़ो-पकड़ो, मारो-मारो कहते हुए उसके पीछे दौड़ रहा है। मीलों-मील वह दौड़ता रहा, पर औरतें बिना रुके उसके पीछे दौड़ती रही। आख़िर वह थक कर चूर हो गया और ठोकर खाकर गिर पड़ा। औरतों ने उसे चारों तरफ़ से घेर लिया। उसे ज़मीन पर पटककर दो औरतें उसकी दोनों टांगों पर और दो औरतें उसके दोनों हाथों पर बैठ गई। दर्द से वह तड़प उठा पर किसी ने रहम न किया। एक महिला ने चुटकी बजाई और औरतों ने एक-एक कर उसके मुँह पर थूकना शुरू कर दिया। एक लम्बी लाइन में खड़ी औरतें थूकती चली गई। उसका मुँह थूक से भर गया,उसे उबकाई आने लगी पर थूकने का यह सिलसिला न रुका, न रुका। जब तक कि वह चौंक कर उठ न बैठा।

बृज राज किशोर 'राहगीर'

कद्र

डॉ. नयना डेलीवाला,

विभा को आश्चर्य हुआ कि मामा के घर से लौटकर आनेवाले चिंटु को क्या हुआ है? क्यों एकटक देखता रहता है? अटल तो उसके बाप के जैसा है, पर पता नहीं कौन-सी सोच में पड़ा है? उसे कल का कुछ तो पता होगा ही? दु:ख रहे शरीर के बावजूद भी सब भोजन तो करें, यही सोचकर कठौती में आटा लेकर बैठी तो सही पर पानी तो लेना भूल ही गई। इतने में चिंटु पानी का गिलास भर कर रख गया। दु:खों की झड़ी के बीच चिंटु का यह व्यवहार मीठा लगा। कितने सालों से बस एक ही प्रकार का जीवन जी रही है? पुराने दिन याद करते हुए एक चलचित्र सा आँखों के सामने आ जाता है। सालों से बस एक ही जीवन है। आकर के पति गाली दें, नशे में हक्क जमाये, बात-बात में मारपीट करें।

हाँ चिंटु के लिए सब कुछ सहुँगी आखिर उसकी माँ हूँ न, मुझे ही उसका खयाल रखना है, उसको देखना है न? बाप अगर सीखाए तो वह मुझसे दूर होता जाएगा, माँ की तरह थोड़े न बाप पाल सकता है? मुजे भले न माँ का प्यार नहीं मिला पर मैं तो अपने बच्चे को वह प्यार दूँ न! परंतु क्या वह उसके पिता जैसा होगा? फिर से कल की रात याद आ गई। महेश को आने में देर कैसे हो गई, सोचती हुई खड़ी हो गई। उसका खाना छाँप पर रख दिया, और मन तो बावरा, सोचने लगा कि उसकी ट्रक खराब हो गई होगी, शराब पीने बैठा होगा? कितनी बास मारता है! दुर्गंध से बचती हुई लाश की भाँति मैं सोई रहती हूँ, परंतु ट्रक की आवाज़ ने उन विचारों को तोड़ा, वह दौड़ कर बाहर गयी। ट्रक आकर खड़ी हो गई। महेश के साथ एक औरत भी उतरी। उसने हिम्मत की, कि 'कौन है यह?' उस औरत को खिंचकर महेश गैराज में ले जा रहा था। जमुना जोर से चिल्लाई, 'खड़े रहो', महेश गुर्राया, जमुना को खोली में घसीटकर ले गया और ठंडे हो रहे चूल्हे में से जलती लकड़ी लेकर जमुना को पीटने लगा। जमुना चीखने-चिल्लाने लगी। अचानक से खिड़की खड़खड़ायी। उसे आभास हुआ, शायद कनक क्लीनर ही था। जमुना साडी का पल्लु ठीक करने गयी कि उसका हाथ जले हुए घाव को छू गया और जमुना की चीख निकल गई। ऐसा लगा कि क्लीनर बाहर दौड़ा हो, कुछ देर बाद फिर से उतावली, डग भरते हुए कोई आया और खिड़की पर ही रुक गया। खिड़की से लंबा हाथ हुआ जिस में घाव पर लगानेवाला मरहम था, परंतु लगाए किस प्रकार? उसकी पीठ पर क्लीनर ने ही मरहम लगा दिया। सारी रात जमुना रोती रही, पर कर क्या सकते है? मेरा चिंटु... दु:ख के बहाव में एक तिनका ही है।

सुबह हुई। वह औरत अब भी होगी? इतने में ही खिड़की से कोई दिखाई दिया। चिंटु और क्लीनर फुसफुसाकर कुछ बात कर रहे थे, क्या होगा? वह रोटियाँ बना रही थीं। चिंटु जमुना की साडियों को गोल करके गठरी बांध रहा था। उसने वह गठरी क्लीनर को दी और धीरे से बड़बड़ाया, 'माँ, चल जा तूं इसके साथ चली जा, यहाँ से तूं दूर चली जा, मैं तुझे मिलने आऊँगा।' क्लीनर अंदर आया। जमुना

के मन में विचार उठा कि 'मुजे जीना है वह भी चिंटु के लिए। मेरे प्रेम की कींमत शायद यही करेगा।' जमुना के पैरों में जोश आ गया।

त्याग

लंबी बीमारी के बाद आज सुखीराम अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर चल बसा। दोनों पुत्रों को उसने अपनी तरफ से अच्छ े संस्कार दिये – ऐसा वह ताउम्र सोचता रहा और उसपर अभिमानित होता रहा। सुखीराम की बाजार में अच्छी-खासी दुकान थी और बड़ा-सा घर था।

दोनों बहुयें भी संभ्रांत घर की कुलीन महिला निकली। सुखीराम के जाने के बाद बड़े-से घर के बीचोंबीच एक बड़ी-सी दीवार खड़ी कर दी गयी। काफी अशांत वातावरण और कोलाहल के बीच नजदीकी रिश्तेदारों ने मिलकर सारी संपत्ति के दो टुकड़े कर दिये। कई बार तो मारपीट की नौबत भी आयी पर रिश्तेदारों ने बीच-बचाव किया। किसी प्रकार भारी मन से दोनों बेटों ने विभाजन को स्वीकार किया। बहुयें भी अपनी किस्मत को कोसती रही।

सुखीराम के दिये संस्कारों के जड़ और गहरे निकले। एक चीज के विभाजन को लेकर दोनों बेटों के बीच ठन गयी। दोनों बेटे त्याग करने को आतुर थें। छोटे बेटे का कहना था – “भैया बड़े हैं और माँ पर उनका अधिकार ज्यादा है। माँ तो उन्हीं के साथ रहेगी।

“बड़ा भाई भी कहाँ माननेवाला था....? वह तो और संस्कारी निकला। उसका कहना था – “माँ को छोटा अधिक प्यारा है और उसके बच्चे भी दादी के अधिक दुलारे हैं। मैं अपने मन को समझा लूँगा और माँ छोटे के साथ ही रहेगी।“

तर्क-वितर्क का दौर लंबा चला। दोनों भाई एक-दूसरे को समझा नहीं पाये। अंततः माँ को वृद्धाश्रम भेजने पर सहमति बनी। वृद्धाश्रम जाते समय माँ फूट-फूटकर रो रही थी। दोनों भाई इस बात को लेकर हतप्रभ थे कि पिता की मृत्यु के समय भी माँ इतना फूटकर नहीं रोयी।

दोनों बेटों ने आज त्याग का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया और माँ वृद्धाश्रम की खिड़की के पास बैठी उदास आँखों से न जाने किसकी प्रतीक्षा में सड़क की ओर देखती रहती है.......

अमिताभ कुमार
”अकेला“

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाली –

दुर्गा भाभी

आजादी की कहानी भारत के वीर तथा वीरांगनाओं ने अपने खून से लिखी है! आजादी को प्राप्त करने के लिए लाखों दीवानों ने अपने प्राणों की चिंता ने करके फांसी के फंदे को हंसते-हंसते चूमा है, तथा अपना सर्वस्य न्योछावर करने में भी देरी नहीं की! उनमें से एक वीरांगना है दुर्गावती अर्थात जो इतिहास में दुर्गा भाभी के नाम से जानी जाती हैं! ऐसी हजारों वीर वीरांगना है जिनका हमें नाम तक याद नहीं है! लेकिन उनके बलिदान की कहानी के लिए भारत के लोग सदा ऋणी रहेंगे!

दुर्गा भाभी का जन्म सहजादपुर ग्राम (कौशांबी) मे 7 अक्टूबर 1902 को हुआ! इनके पिता का नाम पंडित बांके बिहारी लाल था जो कि इलाहाबाद कलेक्ट्रेट में नासिर थे! दुर्गा भाभी एक संपन्न परिवार से होने के कर उनकी हर इच्छा पूरी होती थी!

इनका विवाह 10 वर्ष की उम्र में लाहौर की भगवती चरण वोहरा से कर दिया गया! भगवती चरण वोहरा के पिता रेलवे में उच्च पद पर आसीन थे और अंग्रेजी हुकूमत के द्वारा उन्हें राय साहब का किताब प्राप्त था! लेकिन भगवती चरण वोहरा अंग्रेजी दासता से भारत भूमि को मुक्त करना चाहते

थे! उनके अंदर राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी तथा भी क्रांतिकारी संगठनों के प्रचार सचिव थे! जब उनके पिता की मृत्यु हो गई तब भगवती चरण वोहरा क्रांतिकारी के रूप में सामने आ गए! इस कार्य में उनकी पत्नी दुर्गा भाभी ने भी पूर्ण सहयोग किया! दुर्गा भाभी का मायका और ससुराल दोनों पक्ष आर्थिक संपन्न होने के कारण उनके द्वारा क्रांतिकारियों को क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए आर्थिक सहायता की जाती थी!

दुर्गा भाभी के जीवन में अनेक क्रांतिकारी घटनाएं घटी जिसमें मुख्य है :-

- अंग्रेजी हुकूमत द्वारा लाहौर में लाला लाजपत राय पर लाठी बरसाने के कारण उनकी मृत्यु हो गई! जिससे सभी क्रांतिकारियों ने लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला लेने की सोची! तब भगत सिंह के द्वारा सांडर्स पर गोली चलाने के बाद कोलकाता पहुंचना! और पुलिस भगत सिंह के पीछे पड़ गई थी जिस कारण भगत सिंह को अपने केश कटवाने पड़े और अपनी वेशभूषा बदलकर कोट पैंट और टोपी पहन कर तथा दुर्गा भाभी को अपनी पत्नी का रूप धारण करा कर अंग्रेजी हुकूमत की आंखों में धूल झोंक कर लाहौर से निकल गए! यदि अंग्रेजी हुकूमत को दुर्गा भाभी के विषय में किसी योजना का पता चल जाता तो उन पर क्या बीतती!

- भगत सिंह के द्वारा केंद्रीय असेंबली में बम फेंकने के बाद अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया! जब दुर्गा भाभी को यह पता चला तो उन्हें जेल से निकालने के लिए अनेक योजनाएं तैयार की! उन्होंने अपने आभूषण तक भेज दिए थे! इसी बीच एक ऐसी दुख दुखद घटना घटित हुई कि मानव संसार की विपत्ति का पहाड़ उन पर टूट पड़ा हो! क्योंकि केंद्रीय असेंबली पर जो बम फेंके गए थे उनके परीक्षण में भगवती चरण वोहरा की मृत्यु हो गई थी! जिस कारण अंग्रेजी हुकूमत ने उनकी सारी संपत्ति को जप्त भी कर लिया था!

- अंग्रेजी हुकूमत को सब कुछ पता चलने के बाद भी स्वतंत्रता की अग्नि में सर्वस्व निछावर करने वाली दुर्गा भाभी ने अपनी कांति की मुहिम जारी रखी! लेकिन पुलिस को कोई ठोस सबूत ना मिलने के कारण उन्हें अधिक समय तक जेल में ना रख पाई!

- 9 अक्टूबर को दुर्गा भाभी के द्वारा गवर्नर हेली पर गोली चला दी गई! जिसमें अंग्रेज अधिकारी टेलर घायल हो गया था!

- दुर्गा भाभी तथा उसका साथी यशपाल क्रांतिकारियों के लिए राजस्थान से पिस्तौल आते हो ले जाते थे! चंद्रशेखर आजाद ने जिस पिस्तौल से अपने आप को गोली मारी थी देवी दुर्गा भाभी ने ही उन्हें यह पिस्तौल लाकर दी थी!

- उन्होंने अपने घर को क्रांतिकारियों के लिए आज से स्थल बना दिया था! जिस कारण सभी क्रांतिकारी उन्हें भाभी के का संबोधन करते थे! और इतिहास में वह दुर्गा भाभी के नाम से प्रसिद्ध हुई!

दुर्गा भाभी का बलिदान भारत के लोगों के लिए सदा प्रेरणा का स्रोत रहेगा! उनके अदम्य साहस की चर्चा युगो युगो तक इतिहास में गाई जाएगी! ऐसी वीरांगनाओं के लिए भारत का प्रत्येक नागरिक उनका ऋणी रहेगा!

नारी .... नया परिदृश्य

आधी दुनिया ,यानी स्त्रियाँ | जिसे ईश्वर की अनुपम कृति माना जाता है | जो सुंदर हैं सौम्य हैं और एक ही समय पर दुर्गा और अन्नपूर्णा दोनों का रूप धर कर कर्तव्य निभा जाती है | भारत जिस के पुराणों में भी स्त्री को शक्ति स्वरूपा माना गया है | सृष्टि के निर्माण से ले कर आज तक परिवfytर्तन की जो आंधियाँ आई है उस में स्त्री की आंतरिक प्रवृत्तियों पर तो कम असर दिखा पर बाह्य परिदृश्य में आमुल चुल परिवर्तन जरुर आयें है | इसके पीछे भी एक लम्बा इतिहास है | देखा जाए तो भारतीय संस्कृति का तो आधार स्तंभ ही नारी को पूजनीय और सम्मानीय मानना है ।

“ यत्र नार्यस्तु पुजनते रमन्ते तत्र देवता

यत्रेतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्त फला क्रिया!”

भारत में स्त्रियों को सदा ऊँचा स्थान दिया गया है | कोई भी मंगल कार्य स्त्री की अनुपस्थिति में अधूरा

माना जाता है | सच है शुभ लक्ष्मी ,सरस्वती अन्नपूर्णा ,माँ मित्र , सखा प्रेमिका .मार्गदर्शिका , मृत्यु से भी लड़ जाने वाली कोई शक्ति है तो वो है नारी शक्ति | यदि हमे किसी देश की असली तस्वीर देखनी हो तो वहाँ की महिलाओं की अवस्था का अध्धयन कर के पता कर सकते हैं | भारत देश के सम्पूर्ण मानचित्र को देखा जाये तो ऐसा प्रतीत होता है कि लाल हरी साड़ी पहने, मधुर मुस्कान लिए सुंदर नारी ही आभा बिखेर रही है| इस भूमि के कण -कण में विद्ववता , बहादुरी त्याग.ममता और आध्यात्म रचा बसा हुआ है | अपाला, मैत्रयी, गार्गी , रज़िया सुलताना, जीजा बाई ,अहिल्या बाई , मैडम कामा , इंदिरा गाँघी , कल्पना चावला , सानिया मिर्जा , बिछेन्द्री पाल, लता मंगेशकर , हर क्षेत्र में चमत्कार करती नारियाँ हैं | ईश्वर ने नारी को आलौकिक व चमत्कारिक गुणों से नवाजा है।

आज हम अपनी ही यात्रा की एक झलक पुनः हृदय पटल से विश्व के सामने चित्रित करते हैं | वैदिक काल जहाँ स्त्री को पुरूषों के समकक्ष माना जाता था | महिलाएं भी पुरूषों के समान सुख सुविधाओं को भोगती थी | उन्हे शिक्षा का अधिकार था | शास्त्रार्थ में ऋषियों को टक्कर देती गार्गी , मैत्रेयी लोपामुद्रा जैसी अनेक नारियाँ थी | विवाह भी परिपक्व उम्र में होता था | उन्हें वर चुनने का अधिकार भी था | शिक्षा और वैचारिक स्वतंत्रता ने महिलाओं का जीवन उच्च कोटी का बना दिया था | वैदिक युग में धार्मिक आयोजनों में महिलाएं भी बराबरी का हिस्सा लेती थी | हम कह सकते है कि यह स्वर्ण काल था |

मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आयी | इसी समय बाल विवाह की प्रथा आरम्भ हुई , पुर्न विवाह पर रोक अनेक सम्प्रदायों में बहु विवाह , देवदासी प्रथा , आदि के कारण जीवन नारकीय हो गया था | मुगलों के आक्रमण के कारण नारी सुरक्षा के नाम पर कई प्रतिबंध लगाये गए | इस के बावजूद अनेक नारियों ने संघर्ष किया और राजनीति ,साहित्य ,समाज और शिक्षा के क्षेत्र में अपना नाम किया | जीजा बाई , रजिया सुल्ताना , गौंड रानी , नूर जहां ,मीरा बाई ने इतिहास में नाम कमाया |

उसी प्रकार अँग्रेजो के आगमन पर या यूँ कहे उनके राज काल में नारियों की स्थिति में बहुत धीमी गति से सुधार शुरू हुआ | राजा राम मोहन रॉय ने सती प्रथा उन्मूलन , विद्या सागर ने विधवा विवाह को बढ़ावा देने और इनके प्रति समाज में जागरूकता लाने की पूरी कोशिश की | इसी समय अनेक महिलायों ने अंग्रेजो के विरुद्ध बहादुरी से अपना विरोध दिखाया | इस में रानी लक्ष्मी बाई , एनी बेसंट विजया लक्ष्मी पंडित , अरुणा आसिफ अली, सुचिता कृपलानी, कप्तान लक्ष्मी सहगल (नेता जी की सेना) में थी | अँग्रेजो में हमे गुलाम बनाया पर उनके काल में शिक्षा का प्रसार हुआ | यातायात की सुविधाएं बेहतर हुँई। दूसरी ओर देश प्रेम की लहर ऐसी उमड़ी की महिलायों ने भी अपना सर्वस्व बलिदान देने में संकोच नहीं किया|

आजादी के साथ नया सवेरा आया और नव जीवन ,नव उमंग , नव अधिकारों और कर्तव्यों ने चारो और नवजागरण का बिगुल बजा दिया | १९५० में जब संविधान बना और लागु किया गया तो महिलाओं की सुरक्षा , सम्मान , और पुरूषों के समान अवसर और अधिकार मिले इस बारे में एक पुख्ता दस्तवेज तैयार किया गया | पुरातनवादी सोच और कमजोर सामाजिक ढाँचे के कारण जिस प्रगति से अब तक भारतीय नारी दूर थी उस ओर ठोस कदम बढ़ाए गए | जिस का लाभ महिलाओं ने उठाया | भारत की पहली महिला प्रधान मन्त्री इंदिरा गाँधी , उत्तर प्रदेश की पहली मुख्य मंत्री सुचिता कृपलानी , डॉक्टर किरण बेदी पहली महिला आई. पी. एस. , कमल संधू एशियन गेम्स में प्रथम गोल्ड मैडल विजेता, बिछेंद्री पाल भारत की पहली महिला जिस ने एवेरेस्ट की चोटी पर विजय हासिल की , फातिमा बिलकिस सुप्रीम कोर्ट की पहली महिला जज ,मेघा पाटकर समाज सेवी ऐसे अनेक और नाम है जिन्होंने अपनी बुद्धिमानी,नेतृत्व क्षमता ,से इतिहास रच डाला |

आधुनिक युग की तस्वीर देखें तो जमीन से आसमान, जल से थल और कृषि से अंतरिक्ष तक नारियों ने अपने दमखम पर नये इतिहास रचे हैं ।

नारी चाहे तो अपनी सूझबूझ, हिम्मत और मनोबल से असंभव को संभव बना सकती है ।

"नारी दुर्गा, नारी सरस्वती नारी धर सौ रूप करे संसार को सुंदर ,सहज, मूर्त ।।"

डा.नीना छिब्बर

जैसलमेर दुर्ग

- रावल जैसल द्वारा 12 जुलाई 1155 ई. में निर्मित जैसलमेर का यह किला सोनार गढ़ या सोनगढ़ कहलाता है! इससे पहले भाटी राजवंश की राजधानी लोद्दवा थी!
- यह सदा से उत्तरी सीमा का प्रहरी रहा है! 'उत्तर भड़ किंवाड़' का यशस्वी विरुद धारण करने वाली भाटी राजपूतों के शौर्य और बलिदान का प्रतीक रहा है!
- सोनारगढ़ का किला त्रिकूटाकृति आकार का तथा गहरे पीले रंग के पत्थरों से निर्मित है! इसे धान्वन दुर्ग के रूप में भी जाना जाता है!
- यह किला 99 बुर्ज़ों वाला विशाल किला अंगड़ाई लेते हुए सिंह के समान प्रतीत होता है!
- स्कले की अनूठी विशेषता यह है कि यह बिना चूने के सिर्फ पत्थर पर पत्थर रखकर निर्मित किया गया है!
- जैसलमेर दुर्ग राजस्थान में चित्तौड़गढ़ दुर्ग के बाद दूसरा सबसे बड़ा लिविंग फ़ोर्ट है!
- दुर्ग का दोहरा परकोटा कमरकोट कहलाता है!
- अक्षय पोल किले का मुख्य प्रवेश द्वार है!
- राव जैसल द्वारा बसाया गया जैसलमेर शहर स्वर्ण नगरी के नाम से विख्यात है तथा इसे म्यूज़ियम सिटी भी कहते हैं!

जैसलमेर दुर्ग के ढाई साके :-

पहला साका :- जैसलमेर का पहला साका उस समय हुआ जब दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने एक विशाल सेना के साथ आक्रमण कर दुर्ग को घेर लिया! लगभग 8 वर्ष तक चलने वाले लंबे घेरे के बाद किले का पतन हुआ तथा भाटी शासक रावल मूलराज,

कुंवर रतनसी शहीद ए गणित वीर योद्धाओं ने छात्र धर्म का पालन करते हुए 80 धारा तीर्थ में स्नान किया तथा ललनाओ ने जोहर का अनुष्ठान किया!

दूसरा साका :- जैसलमेर का दूसरा साका फिरोजशाह तुगलक के शासन के प्रारंभिक बरसों में हुआ! रावल दुदा, त्रिलोकसी व अन्य भाटी सरदारों वे योद्धाओं ने शत्रु सेना से लड़ते हुए वीरगति पाई तथा दूर्गस्थ वीरांगनाओं ने जौहर किया!

तीसरा साका :- जैसलमेर का तीसरा साका अर्ध साका के नाम से जाना जाता है! इसका कारण यह है कि इसमें वीरों ने केसरिया तो किया लेकिन जोहर नहीं हुआ! अतः इसे आधा सा का ही माना जाता है! यह घटना विक्रम संवत 1697 की है! कंधार का अमीर अली राजचयुत होकर यहां आया और उसने जैसलमेर में शरण मांगी! रावल लूणकरण ने शरणागत रक्षा के आदर्श का निर्वाह करते हुए उसे अपने यहां शरण दे दी! आमिर अली ने षड्यंत्र रचा और राव लूणकरण से अनुरोध किया कि उसकी बेगम तथा परिवार की महिलाएं रानी और राज परिवार की अन्य महिलाओं से मिलना चाहती है! आमिर अली ने स्त्रियों के भेष में अपने सैनिक के लिए भीतर भेजने का प्रयास किया पर दुर्ग के पहले ही द्वार पर भेद खुल गया! इस संघर्ष में भाटियों की विजय हुई, लेकिन आक्रांता ओं का सामना करते हुए लूणकरण की वीरगति को प्राप्त हुए!

अन्य दर्शनीय स्थल:-

- महारावल अखैसिंह द्वारा निर्मित सर्वोत्तम विलास (शीश महल), गज विलास, जवाहर विलास आदि दर्शनीय स्थल हैं!
- बादल विलास :- जैसलमेर किले के दक्षिण में निर्मित पांच मंजिले भवन का निर्माण कर सिलावाटियों ने इसे 1830 ईस्वी में जैसलमेर के तत्कालीन रावल महाराजा श्री वेरी साल को भेंट किया था! निश्चय ही यह भवन अपने नाम को सार्थक करता है जैसे वास्तव में यह बादलों के साथ बिहार कर रहा हो!
- दुर्ग के हस्तलिखित ग्रंथों का सबसे बड़ा संग्रह जैन आचार्य जिन भद्र सूरी के नाम पर ' जैन भद्र सूरी ग्रंथ भंडार' है! जो अपने आप में देखने योग्य है!
- जैसलमेर में स्थित पटवों की हवेली जोकि अपने कलात्मक झरोखों, उत्कृष्ट नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है!
- प्राचीन भाटी शासकों की कुलदेवी तनोट माता मंदिर जो कि जैसलमेर में है! वर्तमान में यह सेना के जवानों की देवी के रूप में विख्यात है! इसे थार की वैष्णो देवी कहा जाता है!
- जैसलमेर से 10 किलोमीटर दूर आकल गांव में फॉसिल पार्क स्थित है! इसमें 10 करोड वर्ष पुराने पेड़ पौधों की जीवाश्म है!
- जैसलमेर के दक्षिण पश्चिम मे फैला राष्ट्रीय मरू उद्यान है! जिसमें दुर्लभ गोडावण पक्षी पाया जाता है!

अन्य महत्वपूर्ण बिंदु :-

- जैसलमेर सर्वाधिक तापांतर वाला जिला है!
- राजस्थान में सर्वाधिक व्यर्थ भूमि का क्षेत्र जैसलमेर में ही है!
- जैसलमेर में राज्य की सबसे कम विधानसभा सीटें मात्र एक है!
- यहां के अंतिम शासक जवाहर सिंह के काल में प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी सागरमल गोपा को अमानी यातनाएं देकर जेल में मार डाला गया!

मीरा पुरस्कार

राजस्थान साहित्य अकादमी की ओर से दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार मीरा पुरस्कार ही है! अकादमी द्वारा सर्व प्रथम पुरस्कार 1959 -60 में “भारतीय संस्कृति के प्रतीक” नामक डॉ रामानंद तिवारी की कृति को प्राप्त हुआ !

अकादमी द्वारा वर्ष 2017-18 का सर्वोच्च मीरा पुरस्कार राशि 75000 रुपये दीप्ति कुलश्रेष्ठ, जोधपुर को उनके उपन्यास अंधे मोड़ से आगे को प्रदान किया गया है।

अकादमी द्वारा वर्ष 2018-19 के पुरस्कारों के अंतर्गत मीरा पुरस्कार जयपुर के साहित्यकार सवाई सिंह शेखावत के कविता संग्रह धातु बचाई मैंने के लिए प्रदान किया गया ! इसके तहत शेखावत को 75000 रुपए, प्रशंसा पत्र एवं शॉल से सम्मानित किया जाएगा।

मीरा पुरस्कार की राशि 75000/- रूपए है !

अब तक साहित्य अकादमी उदयपुर के द्वारा दिए गए मीरा पुरस्कार निम्नलिखित हैं -

मींरा पुरस्कार

1	डॉरामानंद तिवारी .	भारतीय संस्कृति के प्रतीक(.नि)	1959-60
2	डॉरामानंद तिवारी .	अभिनव रस मीमांसा (.आ)	1962-63
3	श्री रघुवीर मित्र	भूमिजा (.का)	1963-64
4	श्री पोद्दार रामावतार'अरुण'	बाणाम्बरी (.का)	1963-64
5	डॉवेंकट शर्मा .	काव्य सर्जना और काव्यास्वाद (.आ)	1974-75
6	डॉदयाकृष्ण विजय .	आंजनेय (.का)	1978-79
7	डॉपानू खोलिया .	सत्तर पार के शिखर (.उप)	1979-80
8	श्री हमीदुल्ला	उत्तर उर्वशी (.ना)	1980-81
9	श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	हजार घोड़ों का सवार (.उप)	1982-83

10	श्री नंद चतुर्वेदी	शब्द संसार की यायावरी (.आ)	1983-84
11	श्री विजेन्द्र	चैत की लाल टहनी (.का)	1986-87
12	श्री नंदकिशोर आचार्य	वह एक समुद्र था (.का)	1986-87
13	श्री हरीश भादानी	एक अकेला सूरज खेले (.का)	1986-87
14	श्री ऋतुराज	नहीं प्रबोध चन्द्रोदय (.का)	1987-88
15	श्री ईश्वर चन्दर	लौटता हुआ अतीत (.कथा)	1988-89
16	डॉविश्वंभरनाथ उपाध्याय .	जोगी मत जा (.उप)	1990-91
17	श्री अन्नाराम सुदामा	आंगन नदिया (.उप)	1991-92
18	डॉकन्हैयालाल शर्मा .	पूर्वी राजस्थानी उद्‌भव और विकास (.आलो)	1992-93
19	डॉराजेन्द्रमोहन भटनागर .	प्रेम दीवानी (.उप)	1994-95
20	श्री भगवान अटलानी	अपनी(.उप) अपनी मरीचिका-	1995-96
21	श्रीमती सावित्री परमार	जमी हुई झील (कथा)	1997-98
22	डॉचंद्रप्रकाश देवल .	बोलो माधवी (काव्य)	1998-99
23	डॉसिंहजीवन .	कविता और कविकर्म (.आलो)	2000-01
24	डॉजबरनाथ पुरोहित .	रेंगती हैं चिटियां (काव्य)	2001-02
25	श्री हरिराम मीणा	हां(काव्य) चांद मेरा है ,	2002-03
26	श्री बलवीर सिंह 'करुण'	मैं द्रोणाचार्य बोलता हूं (महाकाव्य)	2005-06
27	श्री आनंद शर्मा	अमृत पुत्र (.उप)	2007-08
28	श्रीमती मृदुला बिहारी	कुछ अनकही (.उप)	2008-09
29	डॉ'ज्योतिपुंज' जयप्रकाश पण्ड्या .	बोलो मनु?बोलते क्यों नहीं !	2010-11
30	श्री अम्बिका दत्त	आवों में बारहों मास	2011-12
31	श्री भवानी सिंह	मांणस तथा अन्य कहानियां	2012-13

साहित्य अकादमी की ओर से कई पुरस्कारों को साहित्यकारों की उत्कृष्ट रचनाओं को प्रेरित करने हेतु प्रदान किया जाता है, जिनमें शीर्ष स्थान पर मीरा पुरस्कार हैं !

तुलसी महिमा

तुलसी के सांस्कृतिक, धार्मिक एवं औषधि जनक अनेक लाभ हैं जिन की महिमा मनुष्य जीवन में इतनी पवित्र है कि उस पर पुराण लिखा जा सकता है ! विष्णु पुराण, ब्रह्म पुराण, स्कन्द पुराण, देवी भागवत में तुलसी महिमा को वर्णित किया गया है !

तुलसी को घर में लगाने और उसके दर्शन करने से पुराणों के अनुसार हमारे अनेक पाप धुल जाते हैं !

पदम पुराण में लिखा है :-

> तुलसी का सुरभित पवन, जहां पहुंचे जाए!
>
> विषैला पवन शुद्ध हो, देता रोग भगाय!!

वास्तविक रूप में तुलसी हमारी रक्षक एवं पोषक स्वरूप है ! जो सदियों से हमें आयु, आरोग्य तथा पुष्टि प्रदान कर रही है !

तुलसी के औषधिय लाभो के बारे में यदि वर्णन करें तो यह अत्यंत विस्तृत है क्योंकि तुलसी के अनेकानेक औषधि गुण है और जिससे रोग निवृत हो जाते हैं !

वैज्ञानिक भी तुलसी के औषधिय लाभो को प्रमाणित करते हैं कि तुलसी असाध्य रोगों के निदान में सहयोगी होती है !

तुलसी भगवतप्रिय हैं यह बात ही तुलसी माँ की पवित्रता को हमारे ह्रदय में स्थापित कर देती हैं !

सनातन धर्म में प्रत्येक शुभ कार्य में ईश्वर प्रसादी में तुलसी दल का प्रयोग किया जाता है ! जहाँ तुलसी के पौधे होते हैं वहाँ की वायु शुद्ध व पवित्र हो जाती है ! तुलसी के पत्तों में एक विशिष्ट तेल होता है जो कीटाणु युक्त वायु को शुद्ध करता है !

वनस्पति शास्त्र में इसे ओसिमम सेंकटम कहा जाता है!

तुलसी को विष्णु प्रिया, सुरसा, सुलभा, बहुमंज़री आदि नामों से भी जाना जाता है !

जैसा कहा भी गया है:-

" अशुद्ध गंदी वायु से उत्पन्न वर्षा कालीन विषम ज्वर और उसके जीवाणु (मलेरिया)सुरसा की सुरभि से समूल समाप्त हो जाते हैं"!

तुलसी के मुख्य प्रकारों में राम तुलसी (हरे पत्तों वाली) 2 कृष्ण तुलसी (काले पत्तों वाली) हैं ! औषधि के रूम में प्राय कृष्ण तुलसी का प्रयोग किया जाता है !

अतः हम यह कह सकते हैं कि तुलसी सम्पूर्ण धरा के लिए वरदान है ! चरक संहिता, सुश्रुत संहिता जैसे आयुर्वेद के ग्रंथों, तुलसी के महत्व को वर्णित करते हैं ! तुलसी के प्रयोग के बारे में यूनानी, होम्योपैथिक एवं एलौपैथिक चिकित्सा में भी प्रयोग किया जाता है !

जो गुण तुलसी में मिलें, अन्य द्रव में नाय!

प्राणियों को स्वस्थ रखें, देती रोग नशाय!!

साक्षात्कार

आर. जे. एस. की तैयारी कैसे करें

सीमा धमेजा डायरेक्टर प्रज्ञा इंस्टिट्यूट, जयपुर

नमस्कार मैडम,

नई गूँज के समस्त सम्पादक मण्डल की ओर से हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं !

हम सब अपने अपने स्तर पर समाज में अपनी भागीदारी दे रहें हैं और निश्चित ही हर छोटा प्रयास भी एक दिन बड़ा परिवर्तन ले आता है ! देश और समाज को आगे बढ़ाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है !

इसी प्रयास में आपका योगदान महती भूमिका रखता है !

विधि के क्षेत्र में आज प्रज्ञा इंस्टिट्यूट ने केवल ख्याति ही अर्जित नहीं की वरन कई आर. जे. एस. की तैयारी कर रहें विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन कर उन्हें मंज़िल तक पहुँचाया है !

सबसे पहले इस उपलब्धि के लिए आपको बहुत बहुत बधाइयाँ मैडम

हम आपसे सबसे पहले जानना चाहेंगे कि आर जे एस की तैयारी की क्या रणनीति हो सकती है, जो सफलता को निश्चित कर दे ?

आर जे एस के एग्जाम की तैयारी कर रहे सभी विद्यार्थियों को हम pre और mains की तैयारी एक साथ करवाते हैं ! ज़ब हम कोई भी टॉपिक पढ़े तो उसके कांसेप्ट को गंभीरता पूर्वक समझना जरूरी होता है ! उसके बाद आपके पास सवाल चाहें pre का हो या mains का आप हल कर सकते हैं !

Pre की तैयारी के लिए कोई टिप्स बताएंगे मैडम ?

आर. जे. एस. के pre के बाद mains के exam में 2 से 3 महीने का ही गैप होता है यानि pre एग्जाम के लिए आप साल भर भी लगा रहें हैं तब भी mains के लिए निश्चित समय मिलता है ! इसलिये सही यही होता है कि आप pre और mains की तैयारी एक साथ ही करें !

आर. जे. एस. के सिलेबस को किस प्रकार पढ़ना चाहिए कि सभी विषयों की तैयारी अच्छी तरह हो सके ?

आरी. जे. एस. की तैयारी करते समय एक major subject की तैयारी के साथ एक minor एक्ट को साथ साथ ले, जिससे सब्जेक्ट को पढते समय interest बना रहेगा ! और minor साथ में लेने से subject तैयार होते जायेंगे ! इससे आपका confidence बढ़ेगा !

Mains के एग्जाम के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिंदुओं के बारे में बताइये!

लिखने की प्रैक्टिस करना सबसे ज्यादा ध्यान रखने की बात है ! बहुत बार पूरी तरह कांसेप्ट क्लियर होने के बाद भी परीक्षा में सफलता नहीं मिलती ! इसका कारण है कि लिखने की प्रैक्टिस न करना ! इस एग्जाम में आपको नियत शब्दों में अपनी बात को व्यक्त करना आना चाहिए !

प्रश्न mains की तैयारी के लिए और क्या सुझाव देना चाहेंगे आप ?

दूसरी महत्वपूर्ण बात है नियत शब्दों में कही गयी बात को कितने सुन्दर, सटीक और सारगर्भित तरीके से लिखा गया है ! उत्तर में केस लॉ को लिखना, कोशिश करके साईंटेशन याद हो तो लिखना, सेक्शन और एक्ट के title को उत्तर के बाद एक लाइन छोड़कर लिखना, महत्वपूर्ण बिंदुओं को हाईलाइट करें !

क्या ऐसा भी है कि इन सब बिंदुओं को ध्यान में रखने वाले students भी पास नहीं हो पाते यदि हाँ तो क्या कारण है ?

देखिए कुछ बातें जिन पर students ध्यान दें तो सफलता सुनिश्चित हो सकती है, उनमें से एक है language paper की तैयारी !

आर. जे. एस. में आपको law के साथ language हिंदी और इंग्लिश का पेपर भी देना होता है ! जिनमें pre एग्जाम में ग्रामर के प्रश्न पूछें जाते हैं और mains एग्जाम में निबंध लिखने होते हैं ! ज्यादातर students इस पर law की तुलना में कम तैयारी करते हैं ! जिसकी वजह से उनके सारे प्रयास जो वो सभी अन्य विषयों को पढ़ने में भी लगाते हैं, उसके बावजूद भी वे पास नहीं हो पाते !

Language पेपर को तैयार करने का क्या सही तरीका है, यह बताएंगे ?

इस पेपर में pre में ग्रामर की तैयारी10 th से12 th स्टैण्डर्ड के किसी अच्छे पब्लिशर्स की book से तैयारी करें !

Mains में निबंध लिखने के टिप्स को समझें ! निबंध में आवश्यक contain होना चाहिए साथ ही अच्छा प्रस्तुतिकरण भी उतना ही आवश्यक है !

सारगर्भित लिखना, उदाहरण प्रस्तुत करना, सुक्तियों या महापुरुषों के वाक्यों को लिख कर शुरुआत करना ! ऐसे कुछ तरीके हैं !

इस को अच्छा लिख पाने के लिए आपको ज्यादा से ज्यादा पढ़ना चाहिए ! राजस्थान से सम्बन्धित विषय पर एक निबंध जरूर पूछा जाता है ! उसकी अलग से तैयारी करें ! करेंट topics को भी तैयार करें !

निबंध को ज्यादा से ज्यादा लिख कर प्रैक्टिस करें !

धन्यवाद मैडम, आपने सटीक शब्दों में स्टूडेंट्स के लिए बहुत उपयोगी जानकारी दी ! इन सबके साथ क्या आप सभी स्टूडेंट्स को कोई message देना चाहेंगे ?

जरूर, किसी एग्जाम में जीत या हार से सुनिश्चित आपके दिमाग़ में पहले हो जाती है कहते हैं ना मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ! आपका उत्साह, आशावादी होना बहुत जरूरी है ! मन में हार को सोचकर जीत हासिल नहीं की जा सकती !

आपको लक्ष्य के लिए एकाग्र होना होगा ! खुद पर पैनी दृष्टि रखनी होगी ! अन्य से आगे जाने की भावना नहीं खुद को आगे बढ़ाने की भावना रखनी होगी !

बार बार खुद से प्रतियोगिता कीजिये ! आप निश्चित ही सफल होंगे !

मैडम आपके उत्साही शब्दों ने निश्चित ही स्टूडेंट्स को बहुत कुछ सीखाया है !

हम एक बार फिर नई गूँज के समस्त सम्पादक मंडल की ओर से आपको धन्यवाद देते हैं ! हमारी शुभकामनायें हैं कि आप इसी तरह स्टूडेंट्स को उनकी मंज़िल तक पहुँचाने के लिए मार्गदर्शन करते रहें !

सधन्यवाद

सम्पादक

नई गूँज

शिवा स्वयं

- अर्चना त्यागी 9461286131
  Tyagiarchana31@gmail. Com
  परिचय:- व्याख्याता, रसायन विज्ञान एवं कैरियर परामर्शदाता जोधपुर राजस्थान

- डॉ नीना छिब्बर 9461029319
  Neena. Chhibbar@gmail.com
  परिचय :- m.a. (हिंदी में अंग्रेजी) पीएचडी दिल्ली

- अमिताभ कुमार 7541817218
  Infoakakela@gmail.com
  पता :- जलालपुर बाया- बगड़ा जिला- समस्तीपुर बिहार

- डॉ हातिम जावेद 9430528296
  Hatimjawed@gmail.com
  पता :- विशंभर पुर पो.- मेहसी, जिला - पूर्वी चंपारण बिहार

- डा. मोहन सिंह 9452587083
  Ymohan114@gmail. Com
  पता:- हनुमान सिंह इंटर कॉलेज, देवकली गाजीपुर उत्तर प्रदेश (233306)

- डा नयना डेलीवाल 9327064948
  N. Deliwala 13@gmail. Com
  15, नीलगगन टावर, नेहरू पार्क वस्त्रा पुर अहमदावाद (380001)

- नेतपाल यादव 8294129071
  Netlaly@gmail. Com
  चरघरा नावाडीह, जमुआ, गिरिडीह (झारखंड) 815318

- बृज राज किशोर राहगीर
  Brkishore @me. Com
  ईशा अपार्टमेंट, रुड़की रोड मेरठ- 250001 (उ. प्र)

- लतिका बत्रा 8447574947
  Latikabatra 19@gmail. Com

- अर्विना प्रयागराज
  Ashisharpit01@gmail. Com

- अमरेंद्र कुमार तिवारी
  Amendra.Tiwari @gmail. Com
  Dubeyhar, kanpur pincode 208019

- डॉ घनश्याम बादल
  Ghansyambadal 54@gmail. Com

- राहुल दीवान 7014150925
  Rahuldeewan1@gmail. Com
  पता :- जुरहरा भरतपुर राजस्थान

- डॉ शिवा धमेजा 9351904104
  Drshivadhameja01@gmail. Com
  पता :- 140A गायत्री नगर जयपुर

- बृजेश कुमार 9785837924
  Aryabrijeshsahu24@gmail. Com
  पता :- जुरहरा भरतपुर राजस्थान

Goonj nayi @gmail.com

शोध, साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट पत्रिका

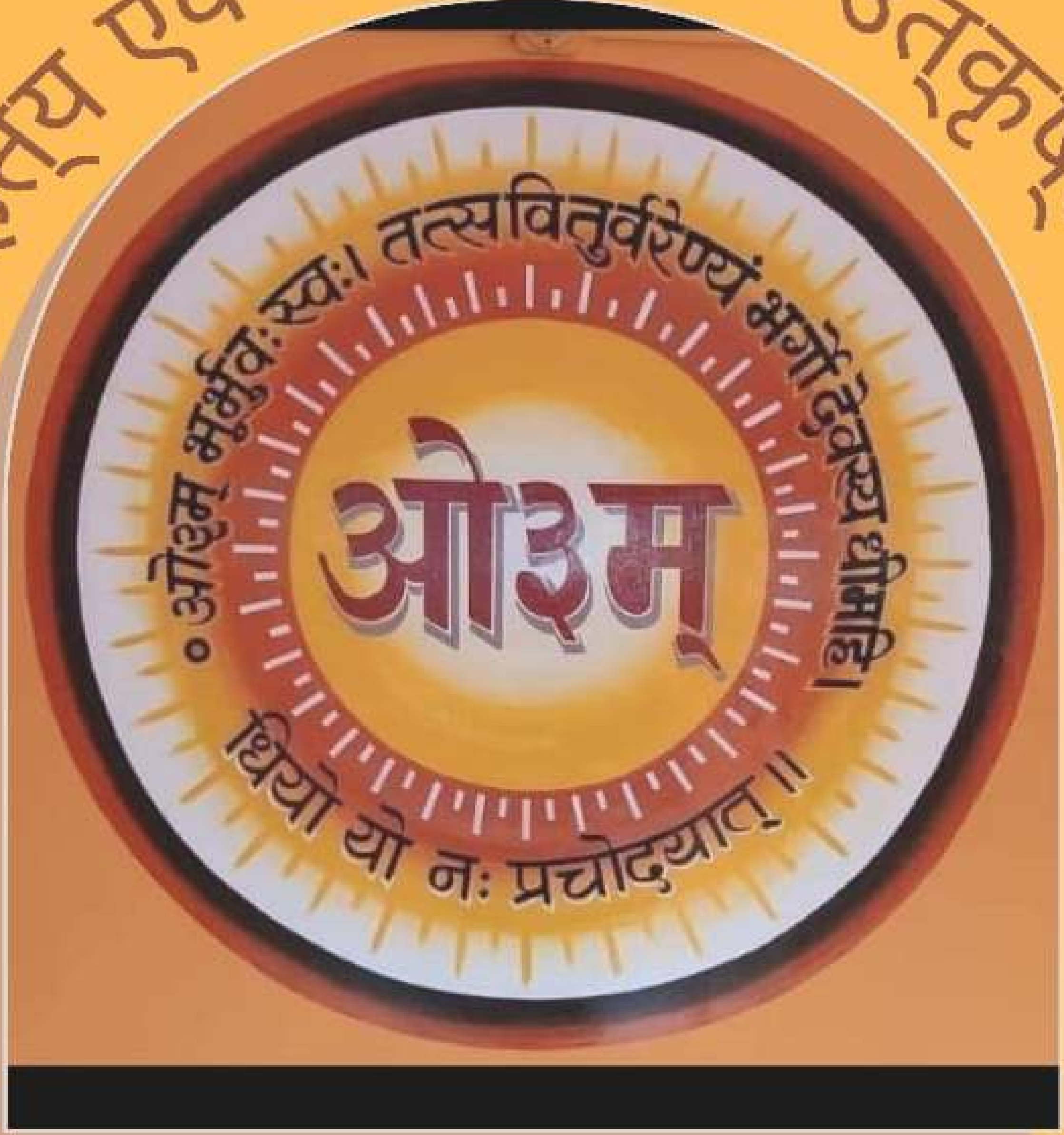

नई गूँज

DESIGN BY RAHUL DEEWAN

Sign up at www.nayigoonj.com
9785837924